# वाग्ठ राजा न न निवा

भूलाः — অত্যিম বাবিক ৮॥, ভাক মাশুল ১॥০, ধার্যাদিক ৪৬, ভাকমাশুল ৬০, ত্রৈমাদিক ৩, ভাক মাশুল ।১০ আন।। অন্ত্রিম বাধিক ১০॥০, ডাক মাশুল ১॥০ টাকা প্রতি খণ্ড।১। বিআপন প্রকাশের মূল্যঃ —প্রতি পৃংক্তি, প্রথম, দ্বিতীয় ও তৃতীয় বার ১০, চতুর্থ ও ততোধিকবার ১০ আন।। ইংরেজী প্রতি পৃংক্তি।০ আন।।

3 • ম ভাগা

किंगिकां छाः-- ३०३ हेट ब -- श्रह्मा िवां त्र, मन ३२५० मान ।

हैः ३२७ माफ अभव थं ३ जाक

७गश्था।

## বিজ্ঞাপন

----

शतीकि अद्विष्ध।

নিম্ন লিথিত ওমগ কলিকাতা ঝামাপুকুর ২৮নং শ্রীমুক্ত বারু শশিভূষণ দের নিকট প্রাপ্তব্য।

३। शांतम माय मश्मांथक कार्यार्थ हूर्न । ইহাতে भौरदित शांतमका व वा शतियत शीं ए एक मृश्वित तक, शांतम कारिन वा या इउन देख गिम कार्यांशा इस ।

मूला २०/० व्याना।

३। তোপচিনি মদলার অরিষ্ট। ইহাতে অগ্নি

ইন্ধি, শারীরিক শক্তি ও দোদ্দর্যা রন্ধি পাইবেক

এবং ধাতৃ পুর্ফি হইবেক। অধিকন্তা, ইহা মেহ, ধাতৃ

গী ড়া, উপদংশ রোগ, বাত্ত, পুরাতন কালী ও হাপানী প্রভৃতি উৎকট পীড়া সমূহের একটি অব্যর্থ
মহোষধ। মূল্য ২০০ টাকা।

ত। অমুপীড়ার মহৌষধ। ইহা বিবিধ জাম রো-গের ঔষধ যথাঃ— জাম উদ্যার ও বমি, পেট জ্বাল। বেদনা ও পেট ফাঁপা, জাজীন ইত্যাদি। দল্পানা।

3। दृहद हिममानात टेजन। देहाट वास् निरु रात्राम, निरुश्नीफ़ा, नाज जाना देजानि जात्रामा इस्र। मूना ১०/० जाना।

ধা বাভরাজ ভৈল। ইংা বিবিধ প্রকার বাত রোগের মছেবিধ। মূল্য ৮৯/০ আনা।

१। कर्ग भी ए। देखा । इहा एक कर्णत श्रुष छ विश्व का व्यादनाना हरू।।/১०

हा किन कनार्श है इन । इना ज का लिया । अका अपन विन्ध हा । यह ना अपन विन्ध हो । उन्ह विन्ध विन्ध

यला॥/५० व्याना

## न्त्रीयनान म्ड

शांड, मानात (हरेन, रेग़ाति॰, वाकावाकण, रित्। भाषा उठ्टनत व्यक्ती প্রভৃতি বিজেতা।

न९ १८०। १८८ ताथावाङात।

এখানে সর্বা প্রকার ক্লক, ওয়াচ ঘড়ি, টাইমপিশ জেমণমেকেবের সোণার রূপার এবং জেমশমরের এবং অতা ২ মেকারের ওয়াচ ক্লচ চেইন এবং বাজা বাকশ ইংরাজি গহনা ইত্যাদি ছোলশেল এবং রিটেল অতি স্লভ মূল্যে বিক্রম হয় এবং মেরামত হয়।

এখানে ওয়াচ ঘড়ি এবং ক্লক ১০টাকার মূলোর অবধি ৫০০ টাকার পার্যান্ত পাওয়া যায় 1

শিক্ষক ৷

অর্থাৎ নব্য ভূমাধিকারিদিণের শিক্ষার্থ নৈতিক ও বৈষয়িক উপদেশ । তৎসহ আদালত ও জমিদারী কার্য্যবহৃত পারস্য ভাষার ক্ষুদ্রদার্থ; ও উপযোগিতা ও বৈদর্গিক শক্তি অনুসারে ভূমির শ্রেণী বিভাগ । কলিকাতা কানেজ ভীট

कानिः नाहेबाति उ जूजन मःक्ष्ड প्रिंग शांउरा योत मृला ३ होका, छाक भार्यन /० जांना।

きず!--です!

পুরাণ প্রকাশ যন্ত্র হইতে মহানির্বাণ তন্ত্র,
মার্কণ্ডেয় পুরাণ, কল্কিপুরাণ, ভবিষ্য পুরাণ, প্রভিগবদ্গীতা, রামানুজভ ষা স্বামীকৃত টীকা, চক্রবর্তী
কৃত টিকা, ও অনুবাদ দমেত প্রত্যেক পুস্তক প্রতি
মাদে এক এক খণ্ড করিয়া বাঙ্গলা অন্ধরে বাঙ্গলা
অনুবাদ দমেত প্রথাশ হইতেহে, প্রতি খণ্ডের
অগ্রিম মূল্য চারি আনা মাত্র।

কলিকাতা প্রামবাজার গোপীমোহন দত্তের লেন ৫নং ভবনে জ্রীপাল চত্র মুখোপাধ্যায়ের নিকট পাওয়া যাইবেক।

পূরাণপ্রকাশ যন্ত্রে বাঙ্গলা ও নাগর অক্রের মুদ্রাঙ্কন কার্যা স্থলভ মূলো পরিপাটি রূপে নির্মাহ হয়।

> শীল শীযুক্ত মহারাজাধিরাজ বর্জমান প্রদেশাধিপতি বাহাদ্রের

## वानू (वार्षिक खनम्खाक

बिह्यकिष्णांतरमनकवितारकत्र जाश्राद्वित्। क वेष्यां लग्न

38७ नश्लिशात किश्शूत (ताण किशारी वालाथाना, कलिकाना।

छेगदाङ छेयशन त आंत्र मिन वर्ग वर्ग वर्ग क्रिया मिन प्रकार मर्म श्राम श्

का वर्षा ( धकनीता ) भी ए । त गरश्य ।

वह करेकत शी ज़ यह वक दश्मतत कामधिक काल मार्या ममू जू छ हहे ता था एक छो हा हहे एल मिक्छ महे वह मार्श्विय वक रकि की मांक म्मिन करित मान्सूर्ग जारता गा हत । वह शी ज़ा वक दश्मातत का विक का एलत हहे एल है हा कि किश्च गार्शिक कोल म्मिन का एला का एता गा हत्र । वह जेवथ कर प्रक मिनम एम्पान का एता गा हत्र । वह जेवथ कर प्रक मिनम एम्पान हत्र । वह गार्शिक के मर्मिन या शूक्य एवत हानि हहे सा था कि छो हा छ है जिसका या शूक्य एवत का रता गा हत्र ।

এক কেডির ঘুলা ২ টাকা, ডাক মাতল ।০ অনুসক্রীব্টিকা।

( मर्स श्रकांत खीरतारगत गरशेवध।)

देश (मवन कतिला तक व्राप्त अपत, करोतक, वाशक (तांग, वद्या) अवर ज्यकाल आमव ज्यांप गर्ड जाव देजानि मूर्ल आकात जीतांग निक्त्रदे আরোগা হয়। এই কলাণকর নিদ্ধা বৃটিকা সর্বা শরীরের রক্ত পরিকার করিয়া জরায়ুর সমস্ত পীড়া নিঃশেষ আরোগ্য করে। এক কেটার মূল্য ২ টাকা ডাক মাস্থল ।০

देखका बज़ावनी।

মপ্রদিদ্ধ আয়ুর্মেদীয় চিকিৎসা প্রস্থাণিধ্য ইহাতে সমস্ত রোগের চিকিৎসা পথাণিধ্য ভিষধ প্রয়োগ ও প্রস্তুত করিবার প্রশালী বিস্তারিত ক্রপে লিখিত আছে। ইহা পরিবদ্ধিত অর্থাৎ ইহাতে চক্রদন্ত, রসেক্রচিন্তামণি ও শাঙ্গ ধর প্রভৃতি বিবিধ গ্রন্থ ইতে নানা প্রকার তৈল, স্তু, ধাতুষটিত ঔষধ ও অরিক্ট আসবাদি সন্নিবিক্ট করিয়া মূল ও বঙ্গ ভাষার অনুবাদ সহিত্ত মুদ্রিত হইয়া খণ্ডে২ প্রকাশিত হইয়াছে; প্রতিখণ্ডের মূল্য ও টাকা ভাকমাশুল। আন। আবশ্যক হইলে আমার নিক্ট মূল্যপাঠা -ইলেই প্রাপ্ত হইবেন।

व्यिविद्यां मना लाश कवित्रां क, कर्याशका ।

এত বিজ্ঞাপন ধারা জ্ঞাত করান যাইতেছে ধে যে বাজি শুদ্ধরণে বাঙ্গলা অক্ষরে হিন্দি ভাষায় একটী পুস্তক রচনা করিয়া দিতে পারিবেন ভাইাকে ৫০ টাকা পুরক্ষার প্রদান করিব।

১৮৭৭ ইং ৭ই ফেব্রুয়ারি

शिषिहिष्णत शोषाभी (यार तहा नवशी आमाम।

দ্বিতীয় ভাগ! দ্বিতীয় ভাগ!! দ্বিতীয় ভাগ!!! ঐতিহাসিক রহস্য।

শ্রি প্রক্ত বাবু রামদাস সেন প্রণীত।

"এ প্রকার প্রন্থ এই প্রথম বাজনা ভাষায়
প্রচারিত হইল।"

বজদশ্র।

The collected Essays of Ram Dass Sen well deserve a translation into English.

Max Muller

এই পুস্তক কলিকাতা বহুবাজার ২৪৯ নম্বর ষ্ট্যান হোপ যন্ত্রে, সংস্কৃত যন্ত্রের পুস্তকালয়ে ও ৫৫ নম্বর-কলেজ ফ্রিট ক্যানিং লাইব্রেরিতে বিক্রয় হইতেছে।

মূল্য ২০ এক টাকা ভাকমাশুল ১০ ছই আনা।

উহার প্রথম ভাগ মূল্য ২ টাকা ভাক মাশুল ছই
আনা।
উপরিউক্ত হানে পাওয়া যায়ন

# পলাশির যুদ্ধ কারা। হিভীয় বার মড়িত।

क्रोंक। स्वर्धन क्रोंक अञ्चलकार्गा के स्वर्धन क्रोंक

বিখ্যাত ভাজার না গোলাইকোন হাল সকল প্রকার চালারে প্রতিবিদ্যালয় প্রতিবিদ্যালয় বাজের কালের প্রতিবিদ্যালয় স্বতী ও ব্যক্তির ভট্য লাগতি হটা প্রতিবিদ্যালয় সময়।

मिनदकाना जतम् छ यथ। व्यश्त्र ।

भागित्य हे कू रत्नाल जि है । बाता श्रेष्ठ विशिष्ट मिन दकाना वोधा।

वांशांता (वन्नीनदत कृ हेनाहिन जम कतिएं बाका, जांकारणत जाना अहे छेवश कूहेनाहर नत शति-वर्डि वावश्र इहेगांत जना श्रञ्ज इहेतार्छ। मात्रिकालिकत मिन्नक भिन्न भविष्य भिन्न किन लाल मिन् कानांत छात्लत उयद्यां श्राती नीर्वा मग्म इंशाङ आह्य। गाँवा अ श्राद्यारगत नियंग इहेग्राह्म, मर्थथानी अ विक्री हमन मश्राद्यत निक्हे थांग कुर्नारेतनत यह।

কলিকাতা মহানগারীর নিকটস্থ ছাওড়ার वारिविकाल गांड त्नत सुभातिन विद्यक्षे मार्ट्यत निक हे वावशदात छेश पान शंज महाज जक शर्षे छ श्रातिष्ठ जंत्र मिनदिकां। छीनशाद्व नगम म्ला थोशवा।

माधातन ल्लारकत প্रांड एक भाष्ट्रेलत गुला २० होका। किन्छ धकका निम २० भाष्ठेश, मतकाति कर्याठा तिश्व महका ति वादयत जन्य जन्य ज्ञा ज्यान माज्यानः য়ের ব্যবহার জন্ম করিলে ১৬॥ টাকায় এক शांडेख शांख्या यारेदिय। जांक यांचल 3 होका कांच-तिक लाशिद्व।

> कानन कुछ्य। षाष्ट्रारक्छे नवनाम।

मःक्षु यद्वत शृखकालस्य विक्यार्थ श्रमुख वाद्य।

युला ३१० धक होका हात्रि वाना, डाक्याणल इरे काना।

बिच्छी हत्र ग च्हिंगाशा शा

श्रीकिं विश्वविश्वविश्वविश्वा।

धरे शृंखक विख् ज चाद्य मर्श विस्त्र ज व्यनाण बहुत पर्भन ध्वर वाना क्यांन शकारत वियोज श्रीकिंज गर्श्य द्वारा किरू मा विवर्ग (लथा इहेश्रांट्य। यूला एक याखल मह बात जाना 38 नः (प्त्रांलाया (होला की हे वाड़। मारका कलि-कांडा जी मिदबन्ननाथ रसूत निकं छांख्या।

> [(हिन्दू हिटेडिविनी इहेटड छेक्क छ) धकिंग दशकर्काश।

धाई (मोकलामात्र विवत्न छा छ। जात्न दिक दिश्वर्ग इरेशा जाद्यम, अजनारे जाश्रा इंश्त आंगाख बाक कतिवा अशं६ छाकाञ्च कियम-षि जीय सुनदमक वार् छ छी हतन दमनदक भं छ । या घ धरेगार्मा धकराज ल्लार्थनः—

''आभि रङ् मिरम इहें एक किममनित जाकिएम जाहि, यश्रां मा जा का सा मा का विक कि की ना शाकात मा सा ज्या ज्या मा सा পরিচয় ছিল, খরচ পতের ছ্রবস্থা দুয়েট অতা ফিলের ২।৪ थोगां अकालक नां गां (पश्याहेशा कां गंज शंज (पथाहेजाय। जानी यद्र ज क्षांद्र महाभाग शदीका किया वाक बराद अव खाटकात डेकोल, ज॰ शदा माणिकशंदक्षत विजीय मुस्मारकत शिल नियुक्त इरेशोट्डन, खामि शुक्तावसाट इयाहि। ध मक्त गाउन करिया महोबोगरक काचाईटर्डिह, जागरा अधित किथि असाकार समारमा सर्भारत रिवर्गरीय | न्ति, देशके दिए प्राप्तिको सिक्ति कि सिक्ति छ जाची स खब-

वांक्रिम ডिकीजाती, मानिमात्री इंगामि क्रियक्री स्थाकर्ममा इकिशा ७ वा एक ववः जिवा जिवा क कजू इहेर व किछ शरम्भात जाजि मञ्जान लगादिकत निक छे खना या ह-তেছে य महाশর অ मान প্রতি ( कि काর্ণে জানি ন। ) वागान त्राशानिक क्ले. इन, इन वागान शक्क वाजिलान किठिन। अकवार मत्न इय जम् शिंक के मकल भाक-जिन्न कि विन मञ्ज जाट्ड। वाञ्चिक इंश कथनइ पृष्ठ क्रार्थ विश्वाम क्रि नाई उक्तिव ना। মহाশয় (यक्तभ विष्ठां ता भारत व्यक्ति छ छ छ का भा वा का भर्भवन भी जुला ज्वान इइयः त्राशाद्य जाश कित्रशाद्वा ध्वज् श्रुष्ठात कथा इत्रखाः शिजा का किम क्रेशा श्रुख्त याक-र्फिगाश नित्रशक्षिणि जा अ श्रेषका लिय शिव्य विषश ज्वाज व्याट्या (मञ्ज्ञ वर्गाम निभन्नधीन প্রভি এরপ कथनरे मछत्वना, व्यामि खडः श्रवः मर्भात्रत्र निक्छे मुश्थ क्रिया बिल्डिंड, क्थन्डे यहान्य्यद विश्व (कान थकादात मिदियत कि जाश्वादियत कार्या कित नाई। ञकांत्री महाइ महाभारतत विश्वाम छ तारा इहेत्रा थाकित्ल जज माद्द्रवन्न कि दाई कार्ड मन्ना প্রতিকারে প্রস্তুত ছিলাম, কিন্তু সেই সকল কারণ বিশেষ করিয়া লা জানিয়া শত মিত একের নিকট সতা कि मिथा। क्लान कथा खनिया ले क्ला पायाद्वाभा छ দরখান্ত করা উভয় পক্ষে কাহারই উচিত নহে। বিশেষ थागामम्भ वाङ्कि भाउ वाश्वाध क्रिलिश ध्राक्ष शूर् क्र উপর বিচার কর্তার এতাদৃশ ভাব থাকা নিতান্ত অত্ন-िछ। छोद्दा मछ। कि ना छानात छना वरकात मगग मानिक गोद अ तिरा हिलाल, उथन यहां भारत एकि या जानि-शाहिएलन। विठांत्र कर्छ त निकि छाजाग्रद्भात य है, उ कान जाश्राध कि जाश्रान नाई। याईया विद्रश्य व्यवश्रा जानात मन्त्रार्थिशश्री । अश्री । अश्र भक्षा मा काष कर्त्रम मा कर्त्रम, मत्न जार्व भाषावा वत्लन ना बत्लम मत्मइ, शिंडिक विमाय शहरन निकंछ याई (ङिङ्गा। जाशामी बीशक्षमीत न स्क महाभदात एक। जामा मख्र, क्रानिएड शादिल ज्यारा ज्यू ग्रह थिकां भिष्य मिदल माक्ष ९ कतिया मकल निद्यम्भ कतिएड शांत्रि ध्वर यागात कांच याशतांध याहि कि ना कि थकादत्र काङ्गत्र निक्छे खनिया ছেन मनिखात्र जानिएड পারিয়া দোষ থাকিলে তাহ। সংশোধনের উপার করিয়া क्षमा প্রার্থনা করিতে পারি, যেমত অভিপ্রারে অনুমূহ कतिया लिथिए जा जा इहेरव।"

मूरभक वांतू धई शब शांहेश। ঢाकांत जज मादिहादात निक छे अहे यदा अक किकि ल्लारथनः—

"আমি অত্যন্ত সমান সহকারে নিবেদন করিতেছি य ঢাকার কমিশবারি অফিসের ছরিদয়াল গুছ वांगांदक य जाद शव लिथिशांद्र, जाइएड व्यवका नारतत्र कामना वातू इतिमयान मजुमनात मानिकशास्त्रत थिकान कतियाः इ, वामि विरवहना कति य कान वास्ति मञ्जान जानचाटक अक जन निर्हादकत्र निक्छे धई धाकात शज त्मशा উচিত विद्यक्ता कित्रित ना। जामि विद्यक्ता कति या भारे श्राकात जादि । अक जान विषाद दक्त निक्छे लिখाতে इतिमहाल अह मजूममादित कठक भाष्डि इछ्या উচিত। गाणानान जानजात जनग्जात जनग्जा इहित, कियो ध विषय किमिनाय माद्द्व छ। छ। जमात्र किविट छ इडेरन, यनात्र। তাহার প্রতি ডিপাট মেন্ট সমক্ষে কোন भाषि इई टिन्धार्य। जामि जाहा मिक कि आम छेथाम णावलाचन करित् डेम्हा करि, वाडधा वाशिन जानुषाइ शूर्यक धनिवदम आभादक कि कि कि विद् इहेर अवकाश मट्ड छेश्राम्भा मिद्वन।"

धरेशां खत छेखत जज मां दिन ल्लाश्यनः নের ২।৪টি মোক আর সমর্থন করিভে হয়। দলিল "এই পত্ত লেখা অসুচিত বটে কিন্ত আমি দেখিতে ভূতপুর্বে একটীং মুক্সেক বাবু আক্রমণার, প্রমাণ দুর্ঘে মহাশরে বিচারে ও বিবেচনার করেকটি পাইনা কি প্রকারে ঐ লেখক ইহার জন্য বিভাগীয় জজ আদালতের উকীল বাবু প্রসায়তক্র গুহ্ প্রভৃতি মোৰদ্মাতে যেরপ ত্রুম আর হইয়াছিল, আমার দণ্ড পাইতে পারে। উক্ত লেখককে আদালতের আ সন্ত্রান্ত ও উচ্চ'াদন্ত ব্যক্তিগণকে সাক্ষ্যমান্য করি বিপক্ষে নিক্ষাতি হওয়াতে । পালে তাহা রহিত বমাননার জন্য দায়ী হইতে হইবে কিন। তদ্বিয়ে হাছেন। ইহা দারা অনেকের অভিজ্ঞ । জিমতে क्रेशां इं इंग स्माक्त्रा विशेष आशील मास्त्र आभि जाभगांक कान भेड़ामण मिट शाहिना। कारण भातित क्लिया जामता हेशत जामा क्रिक णाद्ध। अहे करा मकत्वहें कित्रा भादक। महाभादत्र । हें शा व्यव द्वां भ हम ना द्व व्यानि व्यक्त कान हें व्या कित्रिक्ष

छे था श्र व्यवसम्बन छ हिङ विद्यहन। क्रिटल लिथे क वाभा त्र निक्छे निहात जना छेशश्चि इंडेट शास्त।"

বাবু হরিদয়াল মজুমদার তাঁহার নিজের ও मन्त्रिक वाक्तित कर्यक्ति भाककाग छेठ। इया व्यथम यूरभरकत निक्ठे विठात जना जर्शन कतात आर्थनात প্রেরণ করেন। তাহাতে মুন্সেফ তাহার উপর রাগ थाकात कथा,मञ्जाख लाटकत निकं छ इउ इ उत्रांत कथा लिया थ'रक। विजा मारभक वाबू धरे मत পাইয়া পুনরায় ভাহাতে কি করা কর্তব্য জজের निक छ তা হার পরামশ্ চাহেন। জজ সাহেব পুর্বমত্ত छेखत (नन। धमकल लिथाशं डात शत मूटभक वांबू धरण्य म वामी, इतिमश्नांल छइ मजूममात विवामी, यङ्गमात व्यमाल व्यव व्यात निमित्र (कन भाष्डि शाह-दिना, जोश्तं कात्रण पर्लाहेवात जना २৯ (ल जाः याति द्वांचकाती मह इतिम यांन मजुममादतत नागीय मगन किंगिमनत मादि हर्वत निक्रे (প্रात्तन । किंगिमनांत्र मगन थानि इतिपद्माल छ रक पिया मु भिक्तक (ल एथन रघ, '' आ मात्र এक है मा ज आ मला षाञ्चाव जोशांक भी ख विषाय कतित्व । '' इतिनयांल, वाबू मूल्म्याक्त निक्छे छेशिन्ड्ड इहेशा ज्वाव पन. তৎপর মুপেফ সেই মোকদ্মার বিচার জন্ম ঢাকার गाजिए छिए ते निक छे थ्या करतन। गाजि छे छे मार्ट्य काशक शब (मधिशां वतननः—

कान धातात्र म् जमक ठाज करत्रन, जांदा लिएथन ना हे, जिनि एक अमात्रि कार्याविधित्र 80% धारा-त्रमादत त्माकक्म। (थात्रन कित्राहिन। ४०४ भात्राहि वार्याद्धम वायर ११४। ११४। ११४। १४० व्यर २२४ थात्रात्र छेल्लिथे व्याट्फ, इतिमहालित लिथिक शक् छेक्क क्षिन श्रातात्र जा खर्ग ज जा इतम ना। छेर्। ३१% श्राता अ क्तिन प्रथाख थाना ८०० धार्मा अल्ल जाना তে অভিযোগ করার আবশ্যক। মুগেক তাহা করিতে পারেন। কিন্ত দণ্ড विधित जाहित्नत কোন भातात ज-लर्श ज मू:अक जाशा श्राम व कि ति ज ना शा ति ल ज-वङ्गात जाशताथ शार्ग क्या याइएक शास्त ना।

वर्गिकाछित शंत मूरभक (लर्थनः—

" जाशवादधन धादा छित कना विठानटकन कर्डवा। श्रदेकाटि लिथिट शांद्रन। इतिम्याल मजूममाद्रत अञान এত দর অবিনীত যে আমি তাহার বিকরে অভিযোগ ना कित्रशा शांत्रिना। প্রকাশ্য কাছারিতে -भ दिनाभ स्थोकां कि इशा सम्भा व्यार्थना कि तिल जाहि তাহাকে क्या कित्रव विल, किन्छ भा किन पाय कर्त्र ना विलिया जाराट जासीकृष्ठ रया। यमि जाभान जा-गादक वामी इहेग्रा जाशनात निकंठ छेशाश्व इछग्रा উচিত বিবেচনা করেন, তাহাতে আমার আগতি नाइ। किल जाभिन यिन विद्याना कद्रन य इद्रिम्यान 8ठा माद्यत शक व्यव मत्रशास म्वाता काम जाभावा करतन नाई, जरव जामि य इतिमहाला क कि जिमादी ज वार्षन कित्रमाहि खे वादमण बिश्व क्रांत कावन श्रहेकारे नियतन।"

गः जिर्छि मार्ट्य मुल्मकरक वामियां ब जग श्व लिখाতে शंक मांचवांत्र ठणी वांतू खार छेणा इक इक्षा व्याशिक कित्रशाहन ! डेकीलात कृष्ठे थाश ध्वर छे उदत-त्र मश्दक्रभ जामत्रा भातित्व जाशामी वादत क्षकान कतिन । माजिए छ छ माट इन इतिम शादल त जागिन शहन क्रिया मझशाएखत विष्य विष्य कित्र क्रियात जना जाशाभी २७ (ण गाव्ह मिन शार्या कित्रशाद्या। इतिमशान वार्य मानिकशास्त्रम जिश्री माजिए हे वार् शूर्व ज्या स्थि

## वाग्व वांकांत शिवका।

मन ১২৮० माल ३०ই চৈত্ৰ, ব্ৰহম্পতিবার।

#### यदक है।

গত বৃহস্পতিবারে ভারতবর্ষের আরু ব্যয় সংক্রান্ত शिमाव ध्वाप इत्र। शृद्धि नित्रम ছिल (य, श्वर्वत (जनात्त्रत्वत्र मजार्ज जात्र वार्त्रत हिमाव श्रम् जनात्न मजामन्भाष्यत याधा ठक विठक रहेछ। नर्ज नर्थकक वहे र्किन कल इहेड ना, कार्रा शवर्गायने याहा करियन তাহা পূর্বেই দিদ্ধান্ত করিয়া রাখিতেন, তবু সভাসদ্-गर्वा या या प्रश्ने विक जन स्वाधीन श्रक्त जित्र लाक याता माञादित मधा-समरत कथि अ॰ माञ्चना वा ति भिक्षन कर्ति-তেন। এই নিয়ম থাকাতেই সার জর্জ ক্যাথেল প্রকাশ্য-क्रार्थ ग्रंबर्वत जिनादितलत मजा उ इश्तां ज ग्रंबर्य के ইহাই বলিয়া তিরক্ষার করেন মে, ভাঁহারা ভারতবর্ষকে रिनग कतिया स्छिटिमाकि गितिक वर्मत वर्मत (य २७ (काि **छोको श्रमान क**रतन छोश्त नगा । स्वात अछा-চার আর হইতে পারে না। অবশ্য ক্যান্বেল সাহেবের এই স্পষ্টবাদিতায় আমাদের বিশেষ কোন লাভ হয় না, किछ उर्व এक्र १ इछि शाँ छि कथा छ निल्छ मन ज्थि গ্রবর্ণর জেনারেল রহিত করেন। তাঁহার সময়ে আয় वादात हिमाव शापति शापति প্रश्नु श्रुष्ठ अवश् माधात्रां विना जाशि जिंद छेश श्रेश क्रिंड इड्ड। नर्ज निष्ठेन शूर्विकात नियम প্रकिन्ड कित्रिया हिन। আয় ব্যয়ের হিলাবে সমাত দিবার পূর্বে তিনি উহা তাঁহার সভায় উপস্থিত করিতে বলেন। তদকুসারে व्याभाष्मत ताज्य-मञ्जि द्वां निमाद्य ग्रंड त्र्रम्भाजियात থে সভা বসে তাহাতে ভারতবর্ষের আয় ব্যয় সংক্রান্ত शिमांब अधिक विकृषि स्विति विकृष धिमांन कर्तन । ावनंत (जनादतलत मजामन्भन बाजी क बाह्दतत वि-खत लांकि अरे वक जा खिनि जियम कतिया ছिलिन। द्वीिं मार्टित्व हिमाब लहेश मजांश कांन ठकं विजर्क इय ना। शंक कलाकात मजाय हैश लहेया कर्क विकर्क इय।

द्वीिं मार्वि ज्ञि मत्न जार्व चल् जा करतन। ভারতবর্ষের রাজস্বের প্রকৃত অবস্থা কিরূপ তাহা তিনি ध्योक्षनक्रिं (एथा देश) एक। जिन वलन (य, प्रिं कि जिल्ले जा बार विषय कि कि इसे मक्ष म स्रेवा ब (दो नाई। এই ছটি কারণ না থাকিলে ভারতৰর্ষের व्याग्न रहेट वश्मत वश्मत विखत है।का वैक्ति भा-রিত। প্রথম কারণ দেশের মধ্যে তুর্ভিক্ষ, এবং দ্বিতীয় कात्रण ग्रेनर्भित खें भकात्राद्ध छात्न छात्न द्वल उद्य, রাস্তা, বারাক প্রভৃতি প্রস্তুত করা, যাহা হইতে কোন আগমই প্রত্যাশা করা যাইতে পারে না। ভারতবর্ষের কোন না কোন স্থানে প্রায় প্রতি বৎসর এক্ষণ ছডিক छेशेश्विष्ठ इहेट उट्ड ववः वह मश्रकीय वायि गवर्गयानेत এक्क निजा रेनिमिजिक वारয়त मर्था फाँडाईয়(ছ। রেলওয়ে ৰারাক প্রভৃতি প্রস্তুত করাও গাবর্ণমেন্টের পক্ষে निङ् । खर्याङ्गीय, ख्रुव्यः धिः विद् निङ् निम्बिक वादयत भागिमन इहेया इ। এङ खिन भवर्ग यात একটিও অনিবার্য্য ব্যয় উপস্থিত ছইয়াছে। ফেট সেকে-छोत्रिक आयादित (यान कोि छोको वरमत वरमत निष्ठ इय, किन्छ क्रशांत यूना किया या अया विश्वांत्य अई र योल काछि वाछीछ छेश्त वाछ। अत्राप्त व्यादिशं करंशक (कांछि छे।का अई करंशक वध्मत इईएड मिटिं इहेटल एवं ज्यानः अहे वावि इकि इहेटल इ। धारे बाज छिनित रेख रहेट ग्वर्गियाले व निखात थाई-वांत यां नाई, ञ्चतां वर्षमान य आत्र आहि श्वन-यिन्छे यमि जारा इकि ना करतन, किया निजा रेनियाजिक ত্ৰ ব্যয় আছে তাহা না ক্যান, তাহা হইলে গ্ৰন্-याल्छेत वरमत वरमत अन जात्न जड़ीजूड इहेटड

হইবে। গত কয়েক বৎসরের আয় ব্যয়ের হিসাব নিমে প্রদর্শিত হইতেছে।

३४१३-१७ व्यदम ७२७३७१४० होका वाश वाश ee>>१००७ होका वास इस, ख्रुता १४७०१११० होकात वाना हैन इया यिन हैश इहेड श्वानिक अयार्कन थक्को व्यक्ति। त्र वर्षा १ (व मकल (त्रन अदा त्राञ्चा थक्ठिकार्या लांक नाई ठाशांठ य वाय शिष्यांट् ত। হা বাদ দেওয়া যায়, তাহা ছইলে গ্ৰণমেন্টের তহ-विदल (मण् काि छोकात (वनी थाक। ১৮৭৬-৭৭ थः व्यक्त ७३२०७१००० छोका वाश ववर ७१२४७००० छ।क। वाश रश, ञ्चता ७०१४००० होकात जनाहेन रश। किन्छ देश इदेष्ठ यमि पूर्डिक अ श्वानिक अय्वाक्त वाय वाम (मञ्जा यात्र जारा रहेल ७२८४००० টाका मञ्ज थांका > ৮৭৭-৭৮ शः অব্দে অর্থাৎ বর্তমান বর্ষের টাকা ব্যয় ধরা হইয়াছে, স্থতরাং ৪২৪৯৭০০০ টাকার व्यनां हेन इहेट उद्ध। वर्खिमान वर्षित वाद्यत मर्पा श्वालिक এবং তুর্ভিকের নিমিত্ত ২১৫০০০০০ টাকা ব্যয় ধরা रहेशांट्य। अहे वाय्रक्षां वाम मिटल अश्चाविका তহবিলে থাকিবার সম্ভাবনা ছিল।

অবশ্য এই অনাটন ঋণ করিয়া পূরণ করিতে হইবে। ১৮৭৬ -৭৭ অদে ৩৭২৪০০০ টাকা থার করা হয়, এবং বর্জমান বৎসরে সাড়ে ছয় কোটি টাকা থার করা হইবে। ইহার মথ্যে সোয়াকোটা টাকা সিয়য়ার নিকট হইতে গোয়ালিয়ার রেলওয়ের নিমিত্ত ঋণ লওয়া হইবে এবং অবশিষ্ট সোয়া ছয় কোটির মথ্যে ভারতবর্ষীয় গাবর্ণমেণ্ট ভারতবর্ষের আড়াই কোটি টাকা থার করিবনে সংকল্প করিয়াছেন। উটে সেক্লেটারী ভারতবর্ষের পক্ষ হইতে তাঁহার নিজের ব্যয়ের নিমিত্ত বৎসর বৎসর ইংলণ্ডে কতক গুলি টাকা কর্জ করিয়া থাকেন। এবার কত কর্জ করিবেন তাহা এখনও স্থির হয় নাই, তবে পৌনে চারি কোটি টাকার বেশী তাঁহাকে কর্জ করিতে দেওয়া হইবে না।

বর্ত্তমান বৎসরে গবর্ণমেন্ট কি ২ উপায়ে কত আয় প্রত্যাশা করেন এবং কোন্ ২ বাবদে কত ব্যয় হইবার সম্ভাবনা তাহা নিম্নে প্রদর্শিত হইল।

| অায়   |  |
|--|--|
| ভূমির রাজস্ব                                 | ₹02807000                              |
| করদ রাজ্যের কর ইত্যাদি                       | <b>3393000</b>                         |
| বনবিভাগ                                      | @922000°                               |
| আৰ্থারী                                      | 2692-9000                              |
| কন্ত্যসূত্ৰ                                  | 28199000                               |
| नवर्षः ।                                     | 0000800                                |
| অহিফেণ                                       | PP>00000                               |
| क्षेत्राम्श .                                | 27288000                               |
| টাকশালা                                      | 59@0000                                |
| পোষ্টাফিস                                    | P3@\$000                               |
| (हेनियाक                                     | 0000000                                |
| আদালত  | 1829000                                |
| शूनिन ः                                      | 9.0000                                 |
| সামুদ্রিক                                    | 2022000                                |
| শিক্ষাবিভাগ                                  | 5055000                                |
| স্থা   | @356000                                |
| লিৰিলিয়ানদের পেন্সন ফণ্ড                    | @\$ 98000                              |
| ৰাজা-  | © 0000 000 000 000 000 000 000 000 000 |
| ইদনিক বিভাগ                                  | P#50000                                |
| পৰি লিক ওয়াৰ্কন                             | 3550000                                |
| জল দেচন বিভাগ                                | @@\$\$000                              |
| (में हैं दिन ७ दिश                           | 3 8 9 8 ¥ 000 C                        |
| व्यक्तिभी य शवर्ष स्थाने व्यक्त              | 8323000                                |
| श्राप्तभी स्र श्वर्गरावेद<br>भा असोनात कर्डन | 99F000                                 |
| বাজে   | 2920000                                |

0000 EECED

| स्तरश | 1   |  |
|-------|-----|--|
| वाश   | 200 |  |
|       |     |  |
|       |     |  |

| च्र                             | 50055000         |
|---------------------------------|------------------|
| আমানত শোধ                       | 000000           |
| ভূমির রাজস্ব আদায়ের খ্রচ       | \$0000000        |
| বনবিভাগ                         | 822-2000         |
| আৰগারী                          | 5095000          |
| ক্ষ্মস                          | \$299000         |
| লবণ                             | @>>900°          |
| অহিফেণ                          | 20800000         |
| ইটাম্প                          | ≥>>200°          |
| টাকশাল                          | P25000           |
| পোষ্টাফিস্                      | 0000864          |
| টেলিগ্রাফ্                      | ••••             |
| শাসন বায়                       | 28525000         |
| কুদ্রবিভাগ <b>দ</b> কল          | . 0552000        |
| আদালত                           | ©2288000         |
| भू नि <b>भ</b>                  | 20220000         |
| <b>সামুদ্রিক</b>                | @889000          |
| শিক্ষাবিভাগ                     | 9859000          |
| शृः धर्माथाना                   | 3388000          |
| চিকিৎ দাবিভাগ                   | @272000          |
| मूजाङ्ग उ कार्राङ कलग हेगामि    | 8>82000          |
| পলিটিকেল এজেন্স                 | • <b>3360000</b> |
| পেন্সন ফারলোইত্যাদি             | 99289000         |
| ষ্টেট দেকেটরীর নিকট টাকা        |                  |
| পাঠাইবার বাটা                   | \$6000000        |
| ছুর্ভিক্ষের খর চ                | 28540000         |
| দৈনিক বিভাগ                     | 2952278000       |
| माधात्र शाव् निक ख्यार्कम्      | 02026000         |
| ষ্টেট রেলওয়ে                   | 87-20000         |
| রেলওয়ে কোম্পানির স্থদ ইত্যাদি  | 30970000         |
| পাব লিক ওয়ার্কস, একফ্রাডি নারি | 000000           |
| ৰাজে                            | 00,000,000       |
|                                 | @M8828000        |

कांन रेप्भितियान छ।क् म विमित्व ना, जत्व वाजनाय अ উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে স্থানীয় কর দারা ৩২৫০০০০ টাকা मः थ्रंह क्रिंडिं हरेरि। ভবिষাতে এই ক্ষেক্টি প্রি-वर्जन इख्यांत मञ्जाबना। य मगूनाय श्वलिक अयार्क म কোন লাভ হওয়ার সম্ভাবনা নাই তাহা প্রচলিত वारिय़त मध्या भंगा इहेरव। इर्डिक्तत वाय किक्रिश मश्कूलान रहेरव তাহার বিশেষ উপায় বিবেচনা করা रहेरव। शिष्ठम अक्षरल य इनला ७ का केमन ना हनम नामक तांखा আহে তাহা तहिं कता इहेरव। এই तांखा আটকের উত্তর হইতে বেরারের সীমা প্রয়ন্ত অর্থাৎ ১৫०० याईल পথ विख् छ। जल्भ याञ्चल पिया (कर् लवन लहेशा शंयनाशंयन ना कतिएंड शाद्य अहे नियिख अहे तांखां विश्व इहेगा ए वर हेश ए थाय वाहे हाजात लाक नियुक्त जार्छ। এই রাজাটি উঠিয়া গেলে গাবর্ণ-य्यान्छेत्र कडक छोका वँ छित्व। छिनित छोक म छित्रा याई दिव । नव . नंत्र भाञ्चल मर्वि ज मभाग रहे दिवं अवः कि भिन्ना यादेरव। शवर्वयन्ते প্राज्ञिक इदेशा (इन (य, यज भी ज रश जून। निर्मिण जना मकल्वत छेशत याञ्च छेशेरेशा

फिरवन। शंक वध्मत शंवर्गयान्छेत **क्हिविल ১১৫**৩৯ १०००

छोका ছिল। वर्जयान वश्मदित लिए माएए वात

वर्जमान वर्मति ताजात्यत व्यवशा वहेक श शाकित्व।

GP8858000

হিল বোধাই ও নানালে বিবাহাই ও নানালে বিবাহাই ও নানালে বিবাহাই ও নানালে বিভাগে বিবাহাই ও নানালে বিভাগে বাজলা ও উত্তর

কোটি থাকার সম্ভাবনা।

बमाहेरवन এই क्रथ मावाङ क्रिया एन। এই इहे श्राप्त इहेट छे। जा षाता भवन द्या छ १२००० । छोका डेठाईराड हान, वार्थां वाक्रमां मार्ड माडाम ध्वर छेखत शिक्ठिय अञ्चलत शीष्ठ लक्ष छै।को पिए इहेर्व। य लोहेरमञा छोर्जात कथा खात्र रहेरल जाजिउ লোকের হদয়ে কম্প উপস্থিত হয় তাহাই উত্র পশ্চিম वाकाल जाशिक रहेरव। वाजनां विक कत शाशिक इहेर्व डाहा छित्रीकृष्ठ इस नाहे, छर्व शवर्गान अथारन काम चूजन कत बमाइ क इंक्रूक न दशन, उँ। शापत इंग्ला (य अथात्न (य मकल क्त अहं लिंड जार्ड डाई-त्रहे (कान गित हात इकि कतिया (मिछ्या हय। थून मछन्डः রোড সেদের হার রদ্ধি করা হইবে, গ্রেণ্টে ইহার यदथके देकि उउ पिशां इन । यपि थक्ठ दे द्वां उ मित्मत हात इफि कता हत, जाहा हहेल वाजनात

खाङा दिन विक जात अक ही (भंन विनिद्ध। এই नूजन छ। का निर्कातन कता स (कांन जन। स रस नाई, द्वीिं मार्ट्य देश व्यादेशांत निमिछ অन्क यज करत्रन। छाँशत वाक्षाज्तीरा जिनि धनः छाँशत नाग्र याशामित छा। का मिट रहेरव ना, छाशा क्रिनेट था-(तन वर्रे, किन्छ (य (वर्षातीरमत छे)। अ मिर्ड इहर्व তাহাদের নিকটি যদি তাঁহার যুক্তি গুলি তত প্রীতিকর न। इय जाहा इहेल्ल (वाध इय जिनि जाहा मिशक (माया-इंडि शाद्रिन ना। छोि मार्ट्यं वाक्रमा उ छैः शः व्यथाल छे। व्याङ्गा वमाइवात (श्वू वरे। व्यक्ति वक्त बदमत बदमत ভারত বর্ষের প্রায় স্বতিই ইইভেচ্ছে। (त्न अर्य, जन थनानी थज्ञि इर्जिक निर्वात प्रथान छिপায়। বাজলা কি উত্তর পশ্চিম, বোষাই কি মাজাজ मकन প্রদেশেই এই পূর্ত্ত কার্যাগুলি অত্যাবশাক হইয়া डेरिशाटि। किछ इर। श्रञ्ज अ मश्कात कतिवात वात व्यामिट छिल्नन, किन्छ द्वीि मार्ट्य यलन (य, व्यथान भवर्गयान्छेत छेशत अहे वा यहि निः किश करा जनाय। श्रधान भवनं स्थित इत्य (य वर्ष थां कि जाश मग्रा ভারতবর্ষের, স্থতরাং কোন প্রদেশ বিশেষের উপকারের निभिन्न छेर्। वाय कता विश्वय नटर। याराट मभ्यो ভারতবর্ষের মঙ্গল হয় এরূপ কার্যা সকলে উহা ব্যয় इउताई कर्डवा। উড়िया। कि (यहादा जनथानीत निमिन्न (य नाम পড়িয়াছে ভাহা ভারতবর্ষীয় গ্রেণ্টের (मख्या উচিত नय, वाञ्चल। शवर्गायर्गेत (मख्या कर्खिया, कार्न छेक थनानी घारा वामनार इंडि थ्रथान विভाগের উপকার হইতেছে। छोि मार्ट्य এই क्रिथ युक्ति कित्रा विलान (य, वान्ना अ छेखं व शिक्तिया-श्रुत्ल (य (त्रल उर्त्र उ जल थानी जार्ड वर यारा ভবিষাতে প্রস্তুত করিতে হইবে তাহার বায় এই व्यमताविधि व्यथान ग्रवंद्यके पिद्यन ना अवश्वाक्ता अ छेखत शिक्ष्ण्य ज्यक्षनीय ग्रंबर्ध्यके छेग्रं इसि कि छि। का बमाइशा धई थत एत मश्कूलान क्कन।

खोि मार्व य युक्ति कतिशार्वन जाहा यन नट्र। श्रानीय जाजान श्रानीय भवनंदम्हे कर्ड्क (याष्ट्रन इख्याहे कर्ख्या। किन्छ णाहा इहेल आंत धकिन को क कि ति इ इ । दानी स भविन दिन कि त नम ख जाश छनि जाश्रामत राख जर्मन करा कर्वा। वाञ्चलात (य जात जाटि जारा यिन ममउदे समीत निद्यािष्ठिक ह्य, जारा र्हेटल क्षथान शंवर्गयिव व जायादित माश्या करा पृत्त थाकूक, जायताई ध्रथान श्वर्वयिन्टेक यदथके शिल्यादि। मार्या क्रिडिं शिल्यादि। किन्त योजनात जातात ध्यान र ध्यान थ धन धनि ध्यान वावर्गाया स्टा राखा. ताकनाश कृथित ब्राक्य यारा न्ध्य रहा छोरा होता छात्र हरी हा श्वर्वी हा श्वर्वे सार्व्य हिन ज्ञान मोराइ ग्रवन्दात्छेत धारान अहे जिह्दिन्दन जोक त्र इन वाहिएक ला९ शन मगड जा श

दिया कदा। वना विভाগ,

দেবার শুলক, লবণ,

वाशरे कात्र वर्गीत

भवन (क्रितः) (कवल (जल, পूलिण, णिका), (ब्रिजिखिमन প্রভৃতি তাটিটি বিভাগ স্থানীয় গ্রন্থেন্টের হস্তে। এত দিন প্রধান গ্রবর্থেন্ট বোষাই, মাজাজ, বাঙ্গলা श्राक्ष का नी व भवर्ष विक्रिक मर्क स्वा माए भी व क्लि छोका ভाগ कित्रश िष्या थाकिन। इश बाता मगख श्रांनीय जाजाव मश्कूलान इख्यात मुखावना नाई, ञ्चताः शानीय गवर्गयन्त्रेग्न नाना विध शानीय क्र স্থাপিত করিয়া আপনাদের অভাব দূর করিতে বাধ্য इत। এই জন্য রোড मেम ও বিবিধ মিউনি দিপাল कत वाजनाश ज्याभिज इस अवर अहे क्रिश भाषिज इ अयोग (वाचा हे अ गाला (क इ र्डिक डे श कि हे होगा (क এবং উত্তর পশ্চিম তাঞ্চলের লোকে বংশরের মধ্যে छ्य याम প्राय अक मन्त्रा आश्व कदत् । अरे घढेना छिनि वर्डमान थाकिएउउ छि ि मार्घ कि माहरम वाञ्चला उ छे उत शिक्टम ञ्राञ्चल व् उन कत श्राभारत প্রস্তাবনা করিলেন তাহা সাধারণ লোকের বুদ্ধির वाशया।

श्रुलिहे (कवल जात श्रक्तशा यथन जल्लत আवनाक विठात कित्राहिन। उथन উহাতে জল থাকে না; আবার জলপ্রণালী দারা जाशत जाकाल छात्र शतियाण नामा जिमाम थाक, किन्छ (मन्न धनन्ना इरेश। एक् विनशारे এक राशकांत পডিয়াছে। छोि मार्व यमि श्रक्त प्रक्रिंग निवात्व किति । हिन जारा रहेलि यारा ज व (पर्ण धनाराय इय अक्र थ (कान छे था य क्र न। अ ख छ ३ या श ७ वर्न-(मटित वाग्न किम्ना यात्र छारा कित्रलि जामता इ डि-क्चित इस १३८७ निस्त त शाहे । शाही शाही शाही প্রজার রক্ত শোষণ করিয়া হুই চারি বৎসর রাজ-(काष शूर्व कतिएड शादितन वर्छ, किन्छ शतिशास्म निन्छ-य़ हे ठिकिट इहेरव। श्वनं भिन्छ हे होत थ्यान शिष्ट र लाख इहेट उड़न। यमि (मनीय लाकित घता जर्थ थाकिङ डारा रहेल गर्वियिक्टिक इर्डिक नहेंग्रा अक्र थ विव्रु इहर इहर ना। अक अक्षी इर्डिक छेशिष्ट इत्र शर्छ। গ্ৰৰ্থমেন্ট যদি সকল বিভাগ হইতে কিছু ২ वाय कर्डन कर्तन जारा रहेल जाउडः इर्डिक्त वा यो छिठा है छ शास्त्र ।

र्य। वाजनात वाय जारभका जाय विख्त (वनी, किन्छ তবু वङ्गवामी दिव इक्षंभात अक्ष्णव। वाङ्गात मगङ वार्यत जागी अन वामानीता नन, जाश इहेल जाश-(मत এक्रश क्रम ना इडेड ना, किन्छ डावडवर्धत खग्राग्र স্থানের উপকারার্থেও এই আয় নিয়োজিত হইয়া थारक। वाजनात श्राज गवर्गियके अहे जविषात कति-शां अन्छ से नन। आवां त वां क्लांत छे शत छ। का विमाद कि श्रां का का का कि वा ইংরাজেদের কোন জাতির নিকট কুতজ্ঞ হইতে হয় তবে मে वाञ्चाली दिन व निक्छे। छाँ शादिन व थन डिशिएन व पिरण जानगन करतन अवश निविध । ताजय अनागा पिना भाष गाप व विका छेवाई इहरव

প্রকারে ভাঁহাদিগকে সাহায্য করিয়া সম্প্র ভারত-वर्धत ताका करतन। ३४६१ वाक वाकालीता यि ञांचेन ना थाकिए जन जांचा इहरन हेल्द्रा ज्या व पिर्म এত দিন অবস্থিতি করিতে পারিতেন কিন। সন্দেহ। मिहे वाङ्गालिपिरगंत প্रिक ग्रेवर्गये यपि थहे क्रि भिर्म অবিচার করেন তাহা হইলে তাঁহাদের অপরাধের यार्जना नाई।

वक जन भाक्तांत्र इष्ट्रिलालात निक्रे वक थानि कवाला প্রস্তুত করিতে দেয়। চটুলাল কবালা প্রস্তুত করিয়া। তাহা छोल्ला काशदा नकल कतिया (तदाकि कि कि वर्षत জনো তথাকার সব রেজেটারের আফীষে অর্পণ করে। मब রেজিফার অরুপযুক্ত ফ্যাম্প হেতু বাদে উক্ত मलील कालक छेदबब निकछ अबब कदबन। कालक छेब षात्रका नाथ अ इंद्रेनान छेजातक रक्षिकमातीरज मार्थिक करतन। एडः माजिए ष्टेरिव विठादत्र दात्रका नार्थत २० जल थानाली अ त्रल अरा हाता इर्डिक निवांतन होका जित्रमाना इस प्रवर हिनाल ज्याशहित भाषा छे छ इहेर वेहा मर्स्वामीमभा नम्र। या मकल सामि दिल- विहाद जनगाम विद्विहना किन्निमभा भाषि छि । उत्य আছে मिथानि इर्जिक जीवनाकात উপস্থিত लिएन (य, जाँ होत्र वित्वहनाय माजादवव नाजि পाउया इहेट (मथा याहेट हि। जलक्ष भानी छान वाधिक किंग हा है कि कून विक कि महास निम निथि छ

উহার সনিহিত জমি গুলিরই কেবল উপকার হইতে নির্দারিত করিবার জন্য মাজিষ্টেট ইহা বিবেচনা করিতে शास्त्र। এ দেশে যে এত ঘন ২ ছৰ্ভিক্ষ হইতেছে দে বাধ্য যে ফ্যাম্পা আইনের ২৯ ধারা অনুসারে যে भामा অভাবের জন্য নতে, দে কেবল অর্থাভাবের ব্যক্তির নামে অভিযোগ করা যায় দে ব্যক্তি আইনেই निशिख। (मर्म धन नाई विनशाई जन करो। श्रांश विधालिय लिथिड जार्भको जल्म मूलात स्राम्भ र দেখা যায় যেবার এক অঞ্চলে শদ্য না জন্মে দেবার ব্যবহার করায় গ্রব্থেটকে প্রবঞ্চিত করার তাহার কোন অভিপ্ৰায় ছিল কি না। (२) ২৪ ধারার বিধা-त्नित्र मरधा (य मकल रमाकलमा जाइतम जाङ्ग माछिए द्वेरित निक छे भार्शक कि विद्य कालिक छेद व क्र मण्य वाह्य वर्षे किछ छो। स्थात छलक अष्टाइवात इष्टा हिल हेश विद्य-চনা করিবার কারণ না থাকিলে ভাঁহার ভাহা করা উচিত नरह। (৩) यमि काल्निक छेत्र (माशर्म कर्त्रन তবে छो। न्यान्य व्यथन। वाजू श्रमुक छ।। त्या मनीन প্রস্তুত ইত্যাদি হইয়াছে প্রমাণ হইলে মাজিইেট দণ্ড विधान क्रिंडि वाधा; किन्छ क्र छोका मण क्रिंडि इहेर्व তা হা মাজি ট্রেটের বিবেচনার উপর নির্ভর করে, আইনে (कथल ऐक्रज्य मटखंद्र विधान आहि। (8) जिल्ला द्रात व्यमान मि.ज जाथवा मानमि करांत्र कांद्रन वेर्ना कत्रिङ काटलक छेत्र वाथा ना इहेट आदित्र ; किन्छ गाजिए द्वेषे আর গ্রন্থেরে আয়ের অন্যুন দশাংশের এক অংশ অভিপ্রায় ছিল কি না তাহা বিবেচনা করিতে ও वाहित इहेग्रा यात्र এवर मिल मलछन देमना इहेग्रा जाश्राभीत वर्गना छ छर मञ्चल मा या थान मित्र छाहा र्खानटक वाथा। (ए) काटलक छै: अत्र निष्ठां कि वा शहत (श्वूग्लक शहेरा भीरत, वाशवा जिनि छेभयुक कर्भ विद्यान ना कित्रश (माधर्म कित्रिक थाद्रिन; किन्छ ভারতবর্ষের মধ্যে বাজলা দেশ ইংরাজদের প্রকৃত শান্তি সম্বন্ধীয় তর্কে কেবল মাত্র সোপার্দর উপর कांग(अञ् । यथन টाकाর দরকার হয় তখনই বাজনা নির্ভর করিয়া মাজিট্রেট চালিত হইতে বাধা নহেন। मिला जात्रजवर्षत ताजारमत महिज इंश्लिम गवर्गराने शहरकार्षत मर्ज पात्रका नाथ किथूती मलनीय इहेटज. যত বার যুদ্ধ করিয়াছেন তাহার অধিকাংশ ব্যয়ই পারেননা; কারণ দে উপযুক্ত স্থানে ট্যাম্প বিষয়ক वाक्रलात (यागाहिक इहेशाए। আফগান युक्त ७ जूमकान कतिलि थक् छ छ छ न। य मन निथाल युष्क्रित मग्र हेश्ताष्क्रिता यि विथूल अर्थ वास दिक्षिया माद्रका नार्थित मलील कालकिर्द्रत निक्रे করেন ভাষারও অধিকাংশ বাঙ্গলা হইতে সংগৃহীত প্রেরণ করেন তিনি সাটিফাই করেন যে উহাতে ৪ টাকার छ्यान्थ नाशितः किन्छ श्रक्त अभ जाहित्व २ उक्तिल जरूमादित छे हाटि ३५ हो कात्र छो । लाशिदा। এরপ তাবস্থায় দারকা নাথ সরলচিত্তে কাজ করিয়া ছिल विरवहनां श शहेरकार्छ जाशांक मण इहेर्ड मुख्नि निशार्चन। इंद्रेलान भाकात मस्य निमानाव्य त्रांत्र वश्न जाए ।

बाक्षला शंबर्धमध्येत बावश्राशंक मंजात (कार्ड व्यव अशोष्ट्रम व्यर्था द्रांका तूर्शालिक नावालक मध्योग वाहित्तत मश्भाधन इहे. जं हा नावाल क्रित खत्न भिना जारात मणून हरे वाजना रहेज। वाजनोतारे शायन, मलाजित कार्या जानामत थउठ, श्वर्ण परित

### THE AMRITA BAZAR PATRIKA

CALCUTTA, THURSDAY, MARCH 22, 1877.

The prayer of the British Indian Association to the Bengal Government for a standing committee of experts, for the examination of dramas, in connection with the Dramatic Performance Act, was rather injudicious and impolitic. The prayer for a standing committee to carry out the purposes of an Act which we would see repealed or at least kept at abeyance for ever, is simply courting danger and keeping the purposes of the Act always in view. It would be something like asking for a censorship for the Press under the gagging Act. It is extremely fortunate that Mr. Eden refused to comply with so suicidal a request.

We have much pleasure in inserting the following: --With reference to your article on the Postal Department which appeared in your issue of the 15th Instant, I beg to offer the following as a refutation of some of the statements therein made which are not correct—and would feel obliged by your inserting this letter in your next issue.

1. As regards myself I have to inform you that I have been appointed as permanent Inspector in the Bengal Circle at the recommendation of Mr. T. W. Gribble. our Post Master General.

Rai Durga Naran Banerji Bahadoor, Inspector Bardwan Division, 2nd grade, has also been appointed to officiate in the first grade through the same recommendation.

Thus you will perceive that the wholesale charge of injustice in this department has no foundation—and you will be pleased to withdraw your statement.

Your's obediently Ananda Gopal Sen. stein of Mondination, Inspector of Post Office. We are glad to find that Mr. Gribble who is so deservedly popular is not open to the charge

brought against him.

It is not always that a debate upon the budget creates so much excitement and the Council holds its sitting up to 5 P. M. as it did yesterday. Almost all the embers took part in the debate. Maharaja Joteendra Mohan Tagore spoke against an irrigation tax and the scheme of decentralization set foth by Sir John Strachey. Mr. Bullen Smith spoke strongly against the threatened abolition ef duty upon cotton, and Maharaja Narendro Krishna said that there was no need for fresh taxation in Bengal. The ablest speech was that of Mr. Eden. He severely taxed Sir John Strachey for being so influenced by Manchester merchants. Lord Lytton had kindly provided the native members and visitors with re----freshments.

The thirteenth annual conversazione of th Mahomedan Literary Society passed off as usual with great eclat. The gathering was large and very respectable, the elite of Calcutta community being present. His Excellency the Governor General also graced the occasion with his presence and evinced great interest in all he saw. The house was brilliantly illuminated, the arrangements were exce!lent, and one felt as if he were in a fairy land. Great credit is due to the energetic and able Secretary of the Society, Moulavi Abdool Lative Khan Bahadoor, the well-known head of the Mahomedan community in Calcutta.

Mr. Cockburn was an indigo planter and first gained notoriety by peaching his masters before the indigo commission. He was placed in charge of the police in Jessore when the new system was inaugurated. He there assaulted an unoffending gentleman and was transferred in disgrace. In Purnia a serious charge was brought against him but the matter was hushed up. Driven from there in disgrace he came to Burdwan where he made his presence known to the people at large and to his subordinates. He was subsequently suspended and whether he was pardoned or how he got over this scrape we do not know. He was again transferred in disgrace and here our story ends. This man is said to be a protege of Mr. Eden and of Mr. Bucklund!

A correspondent writes in connection with the

Fennua perjury case .---"ill you or any of your readers let me know whether the prisioners in the now notorious Fenua case lately released from their recognizances under the doubtful Judgment of Justices Markby, Ainsle and Morris will be liable to whipping under Section 4 of the whipping act for a second conviction of the same effence?

The Counsel for the prisoners ought I think apply to the Court again for a decision on this point, as their release is no satisfaction to them, if they are branded as perjurers to all intents and purposes.

We cannot too highly commend the noble efforts of the Poona Sarvajanik Sova to relieve the famine stricken people of the Deccan. But for their, vigilance and watchfulness, we are assured, thousands by I must say something regarding the Act which was lately passed and which created some alarm amongst the Citizens. this time would have died of starvation and their bones whitened the land of the Maharattas. The Sava's famine letters to Government are very able productions and do great credit to their head and heart. We wish the Sovaa long, prosperous and useful life.

It is a fact that there are many Magistrates in India who enjoy intensely the delight of sending a man to prison. It is not that the source of this pleasure is the gratification of a sense of justice. The sense of justice is satisfied when the man is punished, but what husiness has a Magistrate to visit the prisoners sent by him to jail to see that

self when there is a separate man for it? Mr. A. P. Macdonnell, the Magistrate of Darbhanga was sorely disappointed the other day. He directed his subordinate to prosecute two individuals, a mooktiar and a zemindar, under the stamp Act. The Deputy Magistrate punished the zemindar and released the mooktiar. This gave only small satisfaction to the Magistrate who expected the punishment of both. In his sorrow he referred the matter to the High Court and asked the Judges to comfort him. The Judges sat in deli. beration, but without punishing the mooktiar, they, on the contrary, released the zemindar punished by the Deputy Magistrate. This reminds us of the ancient story of the jackal who was swimming across a river with a piece of meat in his mouth. He saw a fish and opened his jaws to catch it and thus lost both the meat and the fish!

The popularly called Rajahs of Saorapooly in the district of Hooghly are deeply involved in debt. They are liable at any moment to be sold out of their property in execution of numerous decrees. This catastrophe they sincerely believe may be averted solely by the kindness of Government. Accordingly they have applied to the Collector of Hooghly to move the Government to take away the management of their estate from their own hands, and to save their house from impending ruin. Their application has been backed by the Collector of Hooghly as well as by the Commissioner of Burdwan Division. A favourable order of the Lieutenant Governor is now all that is required. We earnestly hope that His Honor will be kind enough to save the most ancient and respectable house in the district, a house even now justly looked up to by no few with veneration for the almost unparalleled liberality that characterized its former representatives. It would not be out of place to add that the interest of a vast number of high caste Hindoos and Musulmans-all Lakhragdars or quit-renters, is so interwoven with that of the applicants, that the sale of their property would bring rain to many and be the cause of numerous dissensions and lawsuits. It is confidently believed by many that the Rajahs, if let alone, will never be able to better their condition. Their energy has been so completely paralized by debt that it is very doubtful, whether they would have ever come forward with their application, without being repeatedly goaded by Babu Lalit Mohun Sing, Zemindar of Shibpore and a representative of another branch of their house.

Such is the apathy of the Press in this country that nobody seemed to take notice of the transfer of Mr. Tweedie from Bankura to Krishnagore during the judicial murder of Rhidoy Patro though we noticed the fact at the time. May we inquire why was Mr. Tweedie transferred at all, and just at that time, and from the post of the Sessions Judge of Bankura to that of the Small Cause Court Judge of Naddia? Will the Government vouchsafe a reply? The question is of the gravest importance and one which affects the personal liberty of the subject most seriously. The question is, whether the judge was punished for acquitting a prisoner who was subsequently condemned by a higher authority. We do not say that the Judge was so punished and for the above reason, but the facts are before us and the facts irresistibly force a moral conviction that Mr. Tweedie was punished for acquitting Rhidov Patro. We hope the powers that be will be kind enough to vouchsafe a reply, or the people will continue to entertain a most damaging notion of the morality of the Government for its vindictive and infamous conduct in connection with this affair. We demand a reply because we yet entertain a hope that the reason of the transfer of Mr. Tweedie may be something quite different from what we suspect and in that case it is but fair that the world and especially the officers placed in Mr. Tweedie's position should know the actual facts of the case. The notion, that Sessions Judges are punished for acquitting prisoners subsequently condemned by a higher authority, must jeopardize the lives and liberties of the subject, especially when no such punishment is accorded when an innocent man is punished whose innoceuse is subsequently established. THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF

The following is said to be an extract from the speech which Sir Hurthur Aobhouse intends to deliver at the evening party which is proposed to

be given in his honor. -Need I say I allude to the Presidency Magistrate's Act? That Act has been misapprehended, misunderstood, and misrepresented, Firstly then that Act was but an act of Sir Stephen; and I had nothing to do with it. Secondly though I admit I did it, I did not do it alone. Mr. Hope did it as well. You know gentlemen, I tried to check his ouslaught against the system of trial by jury. He said that the system was getting unpopular in England. Now this was going too far. I have frankly told Mr. Hone that we have no right to speak on such high subjects, for we don't shave His Royal Highness the Prince of Wales, and if we talk of the Imperial policy of the English nation, the people bere will simply laugh at us. And lastly and thirdly I will whisper a word in thing ears, which please don't give out. Well, then

shams. The Legislative Council is a sham, and the members are all shams. We get our handsome pay and do what we are bid to do. Why do you then frown at us? We are all innocent fellows and so is Mr. Hope. We are paid for our work, and Western philosophy or practical philosopy, or positive philosophy demands that we should do for what we are paid to do.

But yet I am prepared to defend, nay stoutly to defend the Act from caluminators and insinuaters. The Act will secure to you despatch of business. That is the greatest need in India. You do not know what that means. You are always late in your memorials; you always come in the eleventh, twelveth, and thirteenth hour for your representations. Always do things speedily and ask the Government to do things speedily. I said always, no, not always. When you pray for entrance into the Civil Service. then don't be in a hurry, neither should you tease the Government with your importunities then. But wait patiently and despatch in such an occasion is out of the question. Then better wait till the 19th hour. But when a man is to be sent to the prison let him be sent at once. For know you that the only way of regenerating India is to send its inhahitants to Jail.

Then as to your insinuations that the Government is a wicked Government, the only thing that I can say is that ingratitude gives a deadlier wound than the sword. The interest of the Government is identical with that of the people. That being so, I can prove by the simple rules of Arithmetic that the increase of the power of the Government means the increase of the power of the people. This is the mahematical ground. Then take the legal ground. One of the queerest notions entertained by you is that the object of all laws is to tie the hands of the Government. The experience of the last 80 years should have taught you better. The object of laws in these countries is to set Government free to do whatever it pleases. Would you keep your maternal uncle, (I am now coming to the emotional ground) tied hand and foot that he may not have the liberty to do whatever he pleases? And the Government stands to you in the relation of maternal uncle. If the Empress is your mother, I repeat it the Government of India must be your maternal uncle. Now let me ask you in the name of every thing sacred, would you fetter the hands of your maternal uncle?

A film has now obscured your understanding, but twenty years hence when another step will be made towards the. goal we are advancing you will see things more clearly. We have not as yet arrived at the perfection of criminal laws, oh no, we are now only gathering pebbles. But wait, the millennium can't come at once. It must come slowly, natura ly and im perceptably. It is a great advance from six months to two years rigorous imprisonment and twenty years hence, by the same computation you may have 8 years, and forty years hence 32 years. But yet you will be far from arriving at the goal. It is a great step, the enhancement of punishment on appeal, but how far is it yet from perfection! Then we shall approach the confines of perfection when we shall be able to enhance the punishment whether an appeal is made or not. It is a great blessing, the prosecution and punishment of one acquitted, but yet it falls far short of the ideal of criminal perfection. That is something like perfection, the prosecution and punishment of one not charged at all. We have only begnn, and the end is at some distance yet. But rejoice the millennium is at hand.

The day is not far disatnt when this policy now begun will be consummated. altimated, and perfected, and then you shall know how dearly your maternal uncle, whose interest is identical with that of yours, loves you. The Magistrates will then sit all over the land, solemnly to watch over your interests. You will be saved the trouble of dancing attendance at courts, the excruciating tortures of suspense, and the fees of the lawyers. There will be then perfection of despatch and economy. We will not need then a cumbrous High Court with highly paid Judges who are serious burdens to a poor people. The High Court Buildings might be utilized in converting them as barracks for the police. who will tenderly watch over your interests from the highest terraces in the land. The Magistrate can but try on an average 15 cases per diem now. But then they shall send 1500 a day to-prison. LOSSIT - CONTENT OOO - TO BENEFARE THE

FRESH TAXATION IN BENGAL .- So my honorable frieud Mr. Eden" is to raise 27 lacs an l fifty thousand rupees in Bengal and this charge of raising money "could not be in better hands than in those" of the present Lieutenant Governor. By this expression Sir John Strachey evidently means that as Mr. Eden is a popular man, he will be able to raise the amount without creating much discontent. But what a task to a popular Governor! Mr. Eden then must begin his reign with new taxation. The fiat has gone forth, and be the consequence what it may, Mr. Eden must find the money even if it be at the sacrifice of his popularity and the only recompence available to a hardworking. Governor of 60 millions of people, the good wishes and the approbation of the people under his charge.

Mr. Eden must not only find the funds but raise them under certain conditions. Any scheme for new taxation must of course first receive the sanction of the Supreme Government. Ho must avail himself as far as possible of existing modes of raising revenue and endeavour to extend and expand them, rather than have recourse to new and unfamiliar systems of taxation. He must carry all necessary measures without increasing the present establishments. And this is the charge laid upon the shoulder of the unfortunate Mr. Eden. Though Sir done burnchey does not mention it, yet he unu Governor to avail

this demand of the The Finance Mil tenant Governor THE STREET STREET den from the peo Troution is fresh tukation. by the works, a Alten Tueber on De Blis from the province that although the considerable, the will involve with over an enorma mands and collection and on houses for the period ending Jone 376, shews that the casses were collected from 25 districts of Bengal. The net amount collect

ted was inclusive of arrears Rs. 11,18,553 from

total amount collected in the year 1875-76 was thus Rs. 12,13,125.

This Statement does not include the amount subsequently raised from the districts in which the Valuations were made latterly. But the amount cannot be very large, for all the important districts came under the operation of the Act before 1876. In most of these districts the full rate was levied, and there cannot be any expansion of revenue in these districts without fresh legislation and taxation. The total amount expected from the road cess under existing legislation must fall far short of the fresh demand of the Imperial Government. But the present requirements of the districts swallow up the rates now raised, and Mr. Eden will have to raise an additional sum of 27½ lacs. This can only be done by trebling the rates already levied. Is Mr. Eden prepared for it? Is Mr. Eden prepared to levy a rate of 5 or 6 pices, always bearing in mind that the brunt of this charge will fall almost en-

tirely upon the poor people? Then the Finance Minister seems to have forgotten one fact. Lord Lytton is not the man who is likely to break a pledge. But a bare perusal of the despatch of the Duke of Argyll will shew Sir John Strachey that His Grace pledged himself to these two conditions (1) to place the funds at the disposal of those who raised them and (2) to spend the money for their immediate benefit. With these two conditions clearly set forth in that celebrated despatch, the people of Barrisal will surely consider it a breach of the pledge if they are made to pay for the Orrissa canals. Neither is it possible to raise the entire amount from the districts primarily benefitted by the works for which this burden has been imposed upon us. Then there is another consideration. It will not be fair and just to tax the districts primarily benefitted equally. The Orrissa canals cost Rs. 1,65,75,664. The Hoogly canals cost Rs. 1,57,634. So the Orrissa canals cost hundred times more than the Hoogly canals. Will it be then fair to levy the

The Districts primarily benefitted are Cuttack, Balasore, Pooree, Shahabad, Midnapore, Hoogly, Burdwan, Tirhoot, Pubna, Rungpore and Darjeeling By a stretch of authority a few other districts may be included in the category, but yet it will press unbearably upon the people, if these 271 lacs are raisd from these Districts alone. What, if the people say that since they never desired the works nor were those works initiated at their suggestion, they are not bound to pay for them? So much is certain that the position of Mr. Eden is not at all enviable and he is surrounded by difficulties which to us appear well nigh unsurmountable. There is yet another way by which he can raise the amount. But will he have the courage to touch the pockets of those who have capacious throats, and when it is needful can utter the loudest howls? It is the weak Governor who oppresses the poor people, and it is the strong Governor who takes from those who are able to pay. We have not breathed a word as to the justice or injustice of the imposition, for it is utterly useless.

rates equally over Hoogly and Orrissa?

THE BATTLE FOR FAT EMPLOYMENTS.—The odds are however on one side, and it is said we have only a sorry pledge of the Government to take care of our interests. Neither can we entirely trust in the fidelity of this pledge. It is represented to us that it is a mass of flesh without a spark of life in it -a mass of words without meaning. It is utterly untrustworthy and will betray us at the last moment. The stronger party has likewise a pledge; besides they are the interpreters of all pledges and are themselves the judges in the case of Pledge vs Pledge. But we do not choose to rely entirely upon the pledge given to us; in fact our case does not at all depend upon the decision of the case of pledge vs pledge. We shall however give a short history of the pledges; and in doing so we shall follow in the wake of Lord Lytton. Lord Lytton is frank and scorns to screen himself behind meaningless words, or cover his weak points by a sanctimonious tone. Lord Lytton did not mince matters and we shall follow the example of his Lordship.

Lord Cornwallis excluded the natives of the soil from public service, and thus an effectual and thorough demarcation made between the governors and the governed. They lived apart, thought differently, and were as much strangers to each other as the inhabitants of two different worlds. The Sepoy war thus took the governors by surprise, for if the governors had but partially mixed with the natives, the fact of a wide-spread disaffection and combination, could not have been kept concealed from them as it was so effectually done. The governors well high lost the Empire and the had go too far in alienating the people. It was then deem boolutely necessary, for the danger cessions and arrest to pacify the people by concessions, and among other things it was promised that the doors of the posice service would be thrown open to the inhabitants India. This concession was followed by the succe of Satyendra Nath Tagore and this did not the create much visible discontent. In an evil hour St Stafford Northcote founded the State scholarships, and the foundation of these scholarships was followed by the success of several Indian youths.

created something like a feeling of repentence for the boon granted. The facts which occasioned the concession were forgotten or indistinctly remembered, and now came the crushing conviction that in their hurry and thoughtlessness of the moment they had allowed the chance of the public service to be swamped by the natives. The State scholarships were immediately withdrawn and various plans were suggested and some of them adopted to exclude the natives from the competitive examination altogether. Of course there were reasons, given gravely for every retrograde act of the Government, but as they are mere pleas and meant to be understood as such we simply pass them by. The last act of the Government was to lower the age of the candidates still further, so there is now no hope whatever of Indian youths appearing in the competitive examination. That door has been effectually closed.

But in place of the State scholarships a system of nomination was promised. That was eight years ago. This system was not an adequate return for the boon which was once granted and then withdrawn. The Government did not pledge itself to make so many nominations every year, and that was a great advantage. Then it was in the power of the Government to select the nominees and thus by a bad selection bring the system altogether into disrepute. Such was the system granted in return to the one withdrawn. Neither was the system introduced; it was only promised to be introduced. But the State scholarships have been withdrawn long ago, and the doors of the competitive system closed against us long ago. And now after withdrawing the State scholarships and closing the doors of the competitive system, Lord Lytton comes to tell us, that the Government committed a mistake in pledging itself in this way, for they had already entered into a pledge with the competitionwallas, which is not compatible with the one given to the people of India. The Government is therefore in the condition of a man who had made two incompatible pledges, and knows not what to do under the circumstance.

The incompatibility consists in this. If you appoint an outsider in posts hitherto enjoyed by the civilians, you retard the promotion of a great many of them. The civilians grumbled when this system of nomination was promised and the various Governments were deeply engaged to devise a means by which the system could be introduced without rousing the ire of the civilians. Lord Northbrook failed to devise any means and it was left to Lord Lytton to make the experiment to gauge the civilian feeling on the subject. He gave only one appoint. ment in one of the remotest Districts of India, and Gopal Row Hurry Desh Mookh was the fortunate recipient of the post. It was thought that as the people of India were getting impatient it was expedient that something at least should be given to them as an earnest for more in future. It was further thought that the civilians might allow the offer of a single post to a native without much grumbling. The fact is however, the civilians of Bombay are combining to assert their rights, and to demand the fulfilment of the pledge given to them.

Lord Lytton frankly admitted the difficulties of the Government and we have thanked his Lordship for this bold and honest frankness. But his Lordship argues altogether upon a wrong basis. It is not a case of Pledge vs Pledge, no, not at all. We do not at all depend upon the Pledge given to us by the Duke of Argyll for the protection of our rights. A system of nomination was promised when the State scholarships were withdrawn, and the doors of the competitive examination effectually closed against us. You now see that you cannot keep your engagement, on account of a previous one. If that be so give us back what you took from us. That is the only fair and honest course. For instance in the fulness of your heart you generously give a rupee to a man. Sometime after you think it expedient to take back that rupee and you snatch it from him by force. You have a character to maintain and you offer some excuses for this act, and after profuse expressions of regret, you promise him a dozen of glass beads in recompence of the rupee. You thus pocket the rupee and only promise a dozen of glass beads in return. Time rolls on and the man teases you with his importunities. You at last come and frankly tell bim that the glass beads you promised could not be given to him and that you were very sorry for it. Under the circumstances if you wish to maintain your character for an honorable man, and if it is mipossible for you to part with the glass beads, you must return back the rupee at once.

A pledge was given by the Queen to admit equally all classes of the people to the Civil Service and that pledge is not incompatible with the one given to the civil servants. You fabricate a pledge subsequently and raise difficulties all around you of your own accord. Re-establish the State-scholarships and raise the age of the candidates for the Civil Service and we shall be satisfied, the pledge of the English nation will be kept, and no pledge broken. But you keep the rupee in your strong box and rend the skies with your lamentation for your inability to fulfil a pledge so solemnly given—a pledge of your own creation.

The danger was then over, and a sense of security which he hopes will give coting to the hope of making which he hopes will give coting to the hope of making both ends meet. He has a scheme of his own and which he hopes will give coting to the hope of making both ends meet.

Lord Northbrook had a scheme of his own and he pondered for four years upon the subject and completed it. Now comes his successor who says that Lord Northbrook's scheme won't do and he is after another. Of course it will take some time to mature the plan of his Lordship. In the meantime a successor may come and mete the same measure to the scheme of Lord Lytton as his Lordship did to that of his predecessor. Thus the hopes entertained by his Lordship do not raise any hopes in our mind. It would seem as if the Government were killing time in the hope that something may turn up in future.

Lord Lytton has already given an outline of his scheme. His Lordship says that the natives are fit for some posts-, and they are not unimportant-, and unfit for others. We must reserve those posts which the natives are competent to occupy for them and give an intimation to that effect to those who appear as candidates in the civil service examination. This, Lord Lytton thinks, will please all parties. We doubt not the scheme will do very well for the existing civilians, but can that be said of the natives? Lord Lytton thus begins from the very begining. It will take some years to mature the plan; it will take many more years to carry it out. So long we must wait patiently, though, if the boon which was granted and withdrawn had been continued to us, we might have filled by this time many many posts. Then Lord Lytton goes a step further than the Duke of Argyll himself. The Duke promised a system of nomination, Lord Lytton now promises what may be called a double system of nomination. According to the scheme of Lord Lytton not only the recipients of the posts but the posts also will be selected by Government!

Lord Lytton assumes that the people of India are unfit to hold certain posts and will always remain so. This is an assumption and must be taken at what it is worth. They were never tested and found wanting. To charge a nation with incapacity without giving them a fair trial is not fair. Whenever a fair chance was given they gave satisfaction and this fact is a strong point in their favor. The Governor-General must entertain a poor opinion of the people if he thinks that it is for some fat employments that the people of India are hankering. We are not silly enough to believe that the enjoyment of fat pay by a dozen of people will regenerate India. What we want is to take a share in the Government of the country. We want to make ourselves men, so that at future time we can make us a nation.

Let our Rulers bear this in mind. The Greeks, the Romans, and the Mahamedans in different stages of the History of the world conquered vast nations and empires. What nation did so ostracize a subject people from the public service of their own land? Some other modern nations hold foreign possessions, who else except the English in India have so thoroughly excluded the subjects from the service of their own country? Are not the Turks themselves better masters in this respect than our rulers? Are not the Servians and Montegenerians far better off than we are? Are they not practically independent, and very title interfered with by their masters in their own affairs? Lord Salisbury must have laughed in his sleeves when he solemnly adjured the Turks to govern their subjects better, for he knew of all men that the Christian population under the Turks fared better in many respects than the Hindoos did under the Euglish. Are not the other subject nations of England better treated? It is only in the case of India that we hear of incompatible pledges, incapacity, &c., &c., &c.,

Mr. Thomas Again.—Mr. Thomas of Madras has taken furlough and reached Madras to take his passage home. His arrival at Madras was followed by the following supplementary petition from the inhabitants of the village of Vullum, Tanjore district, to His Grace the Duke of Buckingham:—

Most respectfully and humbly sheweth,
That the Collector Mr. Thomas has come to Madrds on
Saturday with a view to proceed home on furlough. We
most respectfully pray that he may be called upon to submit
his explanation both on our telegram and petition, dated 27th
February 1877 before he leaves Madras, particularly regarding tho use of abusive language on several occasions, leaving
us to prove other matters before the officer to be deputed.
This humble request is made to avoid any unforeseen delay
in the disposal of our disastrous case.

Before we proceed to the original petition we must introduce Mr. Thomas to our readers. He is fortunately known in most parts of India and especially to our readers. He is no other than the Mr. Thomas of the Sunnyasee-burial-case. He is no other than the Mr. Thomas of C. Naryana Swami Aiyar, the moonsiff whose counsel he assaulted. He is the same man who entertains the charitable opinion that all moonsiffs in India are corrupt. We shall now present him to our readers in another character—as a man of science. He is a devoted pisciculturist and we shall see how his passion for the science led to a very serious result. But let those who were affected by it speak for themselves. We make extracts from the Madrassee :-

That in the aforesaid village of Vullum, there is the only principal Tank known by the name of Arianamkolam, mother tank, which was but recently thoroughly repaired and cleansed at a cost of Burgood Look of the control of the contr

ment. In proximity to this tank, there is a hill whose rainwater is known for upwards of a century, as the chief source of supply not only to the said big tank, but also of 5 other smaller tanks and four fresh-water wells, which are mainly fed by a channel which draws its supply mainly from the cozings of the big tank aforesaid. These tanks and wells are, therefore solely dependent on the fall of rain; and on them the inhabitants entirely depend for Nunjah irrigational, drinking and bathing purposes and for the use of their cattle.

The Collector Mr. Thomas, has devoted the said big tank to his pleasure and amusement and has, with this object, introduced into it, a particular species of fish for propagation. Last year the Collector, not only shut up the sluice of the supply channel by which the rain water from the adjacent hill found its way to the said tank, but also he raised and strengthened the embankments to prevent water running into the tank by overflowing or even through percolation. Hence the partial failure of water supply in the other tanks and consequent distress and water-famine among the ryots for irrigation and other purposes.

So a famine is not only brought about by a high land settlement, but also by men of science devoted to the propagation of fishes. Then followed petitions and recriminations, prosecutions, fines and dismissals. But let the petitioners say their own say:-

Unable any longer to endure the distress to which we were subjected and with the object of getting it, partially at least mitigated, we waited upon the Collector Mr. Thomas, and requested him to throw open the sluice. The Collector replied. "We shall not order the sluice to be opened. The water that may percolate through the embankment will be enough;" and so saying, destroyed the Petition presented to him. We thereupon addressed Mahazers and Petitions to the Board of Revenue and to Government respectively in 5 the months of July and August last. Some time later, the Collector rode along the Agrahrrum and Mahomedon streets and, with a wrathful countenance to the great consternation of the inhabitants exclaimed in Tamil, in the presence of a large number assembled, (we shall burn down the Ryots of this Vullum village). To add to these miseries, he strictly directed the Police to prosecute the villagers for nuisance and ordered the Town Magistrate to visit these cases with severe penalties.

Among the 6,000 villages in this District, there is not even in a single village an instance of such nuisance cases being so severely dealt with; but in our village the Collector, unusually indeed, now visits every street and lane; and wherever he happens te see evacuations of stray cattle, bullocks and dogs, he at once directs the Police to prosecute the owners of the houses, in whose neighbourhood such evacuations may be found; and the parties are invariably fined in every case to the amount averaging from I to 7 Rupees; -certainly a very heavy fine to screw out in these famine-stricken times; and the fi.nes realized alone in 2 months, amount nearly to Rupees 500. In direct contravention of the repeated instructions and warnings issued from time to time to the Subordinate Magistracy by the preceding District Magistrates and Collectors that nuisance cases ought not to be severely dealt with, Mr. Thomas, we hear, fined the Magistrate of Vullum Town Rupees 10 last month for dealing leniently with nuisance cases. We also learn from a letter which we beg herein to enclose for the information of your Grace's Government, that the said Magistrate of Vullum was, on the 22nd instant, transferred to another division and the Village Magistrate was dismissed the service under unknown pre-

On the 26th altimo, we presented a Mahazer to the Collector Mr. Thomas, and requested him not to treat nuisance cases so severely. He refused to receive the same, sneered at us and-quite ungentlemanly-exclaimed, Be off you dogs, be off you dogs, and ordered the Police Peons to drive us away. On the following day, however, we forwarded the same Petition to his address posted and registered; and, as we were waiting on the 29th idem for a reply, the Collector in his office and in the presence of all officials publicly said, were not thunder bolts hurled on the inhabitants of Vullum? 3)

His Excellency the Governor was then moved by petitions and telegrams. The result was that an inquiry was set on foot to ascertain who were the parties who had signed the petition with a view to bring them to punishment! The petitioners continue:-

Impressed fully with the belief that no redress can reasonably be expected from the Local authorities with regard to the water supply to the tanks and the nuisance cases, we sent in a Telegram prepaid for a reply to the address of His Grace the Governor on the 2nd instant. His Grace has been graciously pleased on the following day to inform us in reply that, our complaint "should have been addressed to the Governor through the Collector, who would then have sent it with all particulars," and that the Telegram had been referred to the Collector for report.

The inhabitants in a body addressed two Mahazers, dated 7th and 9th instant respectively to your Grace's Government and to the Collector, requesting that the sluice might be ordered to be opened and the enormous fines levied in nuisance cases to be refunded. The Collector has arranged with the assistant Collector to conduct an enquiry into the matters complained in the Mahazer. We are afraid that the Assistant Collector is entirely prejudiced and guided by Mr. Thomas. Hence he would merely be the alter ego of the Collector himself. These gentlemen now try to find out such persons whose names correspond with those signed in the Mahazer. From these, they take down depositions to the effect that they did not sign the Mahazer and take down in them whatever they please, irresrective of time and place. As to the truth of this, we humbly beg to refer your Grace's Government to the said letter enclosed.

Besides being a pisciculturist, he was an agriculturist and fond of English vegetables. The petitioners further allege that he is likewise fond of increasing his own comfort at the cost of those who are subordinate to him :-

Close to the eastern bank of the said big mother tank, there is a good Bungalow belonging to the Abkary contractor of this District, which the Collector occupies and to which the contractor was pressed by the Collector to make additions and improvements at an enormous cost to the owner. The Bungalow besides has an extenre compound, in which the Cellector has been raising English and Indian vegetables for his use; and has put up a piquota or machine to raise water to his garden. If water were thus raised, the small quantity that would remain in the tank would soon be exhausted, and the inevitable conscquence would be a great distress to the inhabitants. Further, the tank bank has been lately encroached upon. If the head officers themselves of a District, whose duty is to protect the interests of the subjects committed to their

impossible for them to obtain redress of their grievances in their hands.

Whether His Grace the Duke, the Governor of Madras, did arrest him there at Madras and compel him to furnish an explanation we do not know. The probability is that he has by this time left India to the regret of those who are fond of sensational stories. The moral we draw from the above story is an important one. A good system of canals, roads, and railways and a light land settlement may mitigate famines, but the Government never suspected that there was another cause at work which brought about failure of crops and distress. The Government must also protect the people from agriculturists and men of science This is an important fact for Sir Richard Temple. The long and short of the story is this. There was a fine bungalow on the bank of the tank belonging to the abkary contractor. As the abkary contractor is his subordinate, Mr. Thomas found it very convenient and cheap to occupy it. He raised English vegetables in the compound and amused himself by propagating fishes. In short, he took possession of the entire tank and found himself very comfortable. But the people grumbled as they saw that the water of the tank was very necessary for their existence and this disturbed him very much. He tore the petitions, fined the people, hurled thunders upon their heads, and called them dogs. To us the above story has given some consolation. It is indeed consoling to find that justice is administered by the Magistrates all over India equally. And hence nobody has a right to complain.

#### SCRAPS AND COMMENTS.

The Neilgherry Courier gives the following account of an amusing occurrence that took place the other day at Wellington. Two soldiers of the depot went to a native village, and being in a state of semi-intoxication, made themselves generally disagreeable to the inhabitants. The Monegar of the village—a Toda—is a man of good physique, and one who has evidently never been convinced that the British soldier is invincible. He seized both of the unwelcome intruders, clasping each of them round the waist, and dragged them off to the barracks, where their arrival was hailed with considerable amusement. Thus the British Army has sustained a severe defeat at Wellington.

The London correspondent of a contemporary writes about another adventure of Col. Valentine Baker :-

I mentioned some little time ago, that there had been a commotion in consequence of alleged attempts to an English legion for service in Turkey. The War Office is now, I hear, in a state of excitement over the artful devices of Mr. Valentine Baker, who, in his recent visit to England, availed himself of sources of information placed at his disposal by the War Office to seduce a number of English militia. and volunteer officers from their allegiance to her Brittanie Majesty by officers of high and lucrative appointments in the service of the Sultan. The consequence is that resignations and announcements of probable resignations have been pouring in thickly; and I have been assured on very good authority, that in the event of war with Russia. the Ottoman army will have a sudden influx of something like three hundred English officers into its ranks. The War Office is not pleased at this successful result of Mr. Baker's persuasive eloquence, and in fact thinks it has been rather unfairly treated by that dashing ex-eavalry officer.

In connecxion with the Queen's speech the same correspondent says :--

I should say that Anglo-Indians here are very indignant

that not the allusion was made to the great cyclone of last October, the most awful and appalling disaster of its kind which the world has ever seen. In a single night nearly a quarter of a million of Hea Majesty's subjects wore destroyed. and the fact is not though worth mentioning in the Royal Address to the two Houses of Parliament. Mr. Grant Duff called the attention of the Chancellor of the Exchequer to the omission on Friday and the Chancelloa of the Exchequer made the lame excuse that Lord Salisbury was not able to attend the Cabinet before the Queen's speech was finally settled, and therefore the matter was not attended to. Yet he went on to describe it as "this terrible calamity of which it is impossible to speak with too much gravity or too much sympathy. It is perfectly true that the calamity is one which I believe is altogether unparalleled in the history of the world. Of all the famous catastrophes, including the famous earthquake which took place in the last century in Lisbon. there is nothing to compare with this fearful disaster. Yet, though it happened not three months ago, it had

quite passed out of the memory of the framers of Her Majesty's speech—out of the memory of the very statesman who had created the Empress of India.

Mr. Cobden, in his famous pamphlet on Russia, Turkey, and England, which was written forty years ago, thus described the Turks of the present time :-The Turks, a race of the Tartars of Asia, conquered Constantinople in 1453. In the succeeding century, this people struck terror into all Europe by their conquests. They subdued Egypt, the Barbary states, and all the Arabian coasts on the Red Sea. In Europe they conquered the Crimea and the countries along the Denube; they overran Hungary and Transylvania, and repeatedly laid siege to Vienna At sea, notwithstanding the gallant resistance of the Venetians, they subdued Rhodes, Cyprus, and all the Greek islands. Down to our own time the Turks governed a territory so vast and fertile that, in ancient ages, it comprised. Egypt, Phoenicia, Syria. Greece Carthage, Thrace, Portus, Bythynia, Cappadocia, Epirus, and Armenia, besides other less renowned empires. From three of these states went forth, at various epchs, conquerors who vanquished and subjected the then entire known world.

A bill incorporating a company for the purpose of laying a telegraphic cable between Baltimore and

Dr. Rudolf Meyer, a Berlin journalist, has been sentenced to nine months' imprisonment for having libelled Prince Bismarck in an article written by him in the Social Political Correspondence. The article made the same charge against the Chancellor as the Golos lately made against Lord Beaconsfield, that of having profited by his political position to make money in transactions on the Bourse.

The present Persian Embassy to Burmah appears to be the consequence of a former visit paid to that country by some Persian travellers, who were so hospitably entertained by the King of Ava that they are naturally anxious to renew the acquaintances:-

The principal of these is an officer who went the round of the native states of India some three years ago. With considerable gifts, it is said, of shawls and money from Cashmere, and a necklace of jewels from Puttiala; he found his way to Calcutta, and thence took ship to Rangoon. Persian merchants seem to be not uncommon in Rangoon, and an introduction to the Burmese representative was obtained without much difficulty, the result of which, after a few visits, was that a journey to Ava was determined upon. The King was duly prepared to receive his foreign visitor, who brought with him such presents as he could purchase in Rangoon, consisting chiefly, it is said, of coloured wax candles, and had the satisfaction of laying them at the monarch's feet in his capital. Interpreters were found in fugitive Persians, slaves of the palace, and the Court of Ava soon became impressed with the advantages which must attend an embassy, accompanied by suitable offerings, to the courts of Teheran and St. Petersburg. The only difficulty was to find a man to carry the King's presents. His guest pleaded official engagements, but proposed one of his followers, a man versed in the Russian, Persian, and English languages. Certain valuable gifts, and the post of Court Interpreter on five hundred rupees a month, were the first fruits of the royal favour for this fortunate personage; and not long after, he set out, with four Burmese emissaries, to convey the King's bounty to the Shah of Persia and the Emperor of Russia. A lakh and a half of rubies gold, and silks is said to have been the portion of the Shah, and a lakh was intended for the Czar. Due intimation was given of the departnre of the embassy, and on their reaching the Persian coast, the Consul-General of the Persian Gulf was ready with a salute of twenty-one guns. By way of Shiraz the embassy proceeded to Teheran, where after an interview with Mirza Muhammad Husin Khan, the Prime Minister of Persia, and now the Minister for Foreign Affairs, the emissaries were introduced into the presence of the Shah, and the gifts were duly presented. After some months of the royal hospitality, the Czar's portion of the good things was forwarded via Tiflis to St. Petersburg, and the interpreter, with the emissaries, got leave to return to Ava. Meanwhile, the original visitor, who, since the investiture of his attendant with the ambassadorial character, had found himself rather eclipsed, seeing nothing more to be done in Ava, took his leave of the King, and with presents valued at five thousand rupees, and a ring and sward-belt bestowed as personal marks of the royal favour, returned to India with every reason to be satisfied with his excursion. It does not seem to be quite clear whether his movements were guided purely by his own intelligence, or were regulated by higher official or demi-official authority. The immediate occasion of the present embassy appears to be a likeness of the Shah, which the Persian Councul at Bombay, Mirza Fazlullah Khan, has been instructed to convey to the King of Ava. Such amicable relations between Eastern potentates are no doubt highly gratifying and likely to be productive of very great results.

Here is the true story about Captain the Hon. A. C. Hobart better known as Hobart Pasha:-

In 1868 the Turkish Government requested the British Government to send them a naval officer of rank to organise their Navy; and the Foreign Office granting the permission, the Admiralty was worked to find an Admiral willing to go. There was little difficulty in finding one, the promised salary being something like \$7,000 per annum, and there was any amount of scrambling for the prize. Their Lordships took such a long time considering the claims of the numerous applicants, that the Turks became tired of waiting, and they accepted the services of Captain Hobart. The authorities at Whitehall selected Admirial Sir Williame Wiseman, Bart, K. C. B., who conducted the naval operations in the last New Zealand War and informed the Tarks of their choice. The latter declined the offer "with thanks" being already suited. Their Lordships, in great anger, at lossing such a piece of patronage, ordered Captain Hobart home, and declared they should erase his name from the Navy List if he did not obey them. Naturally enough that gallant officer did not see why he should give precedence to Sir William Wiseman and he refused point-blank to return to England. His name was therefore struck out of the Navy-List. Three years ago the injustice was recognised, and Captain Hobart's name was replaced on the Retired List and as he served with distinction in the Russian War, it seems very unfair to deprive him of his retired pay, which amounts to rather less than £500 per annym.

Mr. Guilford Onslow has just received the following letter from the Tichborne claimant dated from

Dartmoor Convict Prison :--"Dear Onslow, -I forgot to mention to you when here that I had received an answer of 'no sufficient ground' to my petition, or rather that part of it referring to my release, but to the body of it they have tuken no notice. Don't throat to urge what I asked as the after the Sin as possible. I am sorry to hear the motion if it will be brought be cipate any other result they themselves have quell, in the case. only say, Dieu de Please write to n my poor dear chi poor dear chidre friends in the n Please to tell m take. I ought to other usurping will act in obecas to her and my ber me to her n my Agnes's godestalle protection was named after, and not after my brother's wife as stated by a certain judge. I regret to to say I suffer very much from nightly attacks

of papitation of the heart, but I suppose there is no danger

from them, as the doctor took no notice when I comp lained

of them, although I have great difficulty in recovering #

"Atlas" in the World contradicts the report that the Prince of Wales will pay a visit to the Australian Colonies this year, the reason being that it would be impossible for him to see all that he would wish to see and return in time for the opening of the Paris Exhibition on the 1st of May next year, in which the Prince, as President of the British Commission, takes much interest. There is but little doubt, however, that the Prince has made up his mind to visit the colonies, if possible; but all the details of the journey, as well as its probable cost, have still to be gone into.

John Bright is a sincere hater of capital punishment, and does not care to conceal his views on the subject. The Jewish World, the organ, we believe, of English Jews, has been protesting against capital punishment, and Mr. Bright writing to it says:—
"I wish our professed Christian writers were as Christian as you are on this subject. The hangings of the past few weeks have been shocking to me, and I marvel at the insensibility of my countrymen."

A Chinese hell is as horrible as that of the Christians. A contemporary quotes from the Shanghai Courier a specimen of what the Celestials expect, who show no respect for written or printed paper, throw down dirt or rubbish near Pagedas or Temples, or eat

beef. We will take the sixth Court:-This Court is situated at the bottom of the great ocean north of the Wuchiao rock. It is a vast noisy Gehenna, many leagues in extent, and around it are sixteen wards. In the first ward the souls are made to kneel for long periods on iron shot. In the second they are placed up to their necks in filth. In the third they are pounded till the blood runs out. In the fourth their mouths are opened with iron pincers and filled full of needles. In the fifth they are bitten by rats. In the sixth they are enclosed in a net of thorns and nipped by locusts. In the seventh they are crushed to jelly. In the eighth their skin is lacrated and they are beaten on the raw. In the ninth their months are filled with fire. In the tenth they are licked by flames. In the eleventh they are subjected to noisome smells. In the twelfth they are butted by oxen and trampled on by horses. In the thirteenth their hearts are scratched. In the fourteenth their heads are rubbed till their skulls come off. In the fifteenth they are chopped in two at the waist. In the sixteenth their skin is taken off and rolled up into pills.

But in spite of this horrid description of future life for a sinner, the Chinadom, like the Christendom, is none the better.

The Krishnagore correspondent of the Statesman

writes to that Journal:-

A memorial drawn up by the Indian League, on the subject of the appointment of Native Judges, is in course of circulation here for signature, with a view to its being submitted to His Excellency the Viceroy and Governor-General of India. More than 1,000 signtaures have been obtained, and the Krishnaghar public has heartily joined the League in this movement.

The following is the text of a letter written by Midhat Pasha to the Sultan in consequence, as it is said, of the repeated refusals of His Majesty to accept certain change among the high officials of the place which had been proposed by the Grand Vizier. This document is thought to have had no small share in the dismissal of its author from the impor-

tant office he then enjoyed:-

"Your Majesty-Our object in proclaiming the constitution was to end the despotism of the palace, to point out your duties to you, to learn our own, to establish complete equality between Christians and Musulmans and to work seriously for the regeneration of the country. During the last thirty years we have published hatas and firmans enough. The appearance of these decrees has always coincided with the development of some serious political event. But as soon as the danger had passed away, we forgot why these decrees were made public. Do not suppose that we promulgated the Constitution merely to close the Eastern Question. I referred to duties. In the first place, it behoves your imperial person to know those incumbent upon you. in order that those who have assumed the responsibility of government may be able to act. Then we, your Ministers, should know ours. I mean that we ought to abandon the system of dissimulation and flattery which has prevailed in our country for four hundred years. I respect your imperial person and your family, but I cannot make of this feeling an instrument against the interests of my country. My responsibility is great; above all, I fear what I incur towards my conscience, which demands that I should work for the good of my native land. I also dread that power which may call me to account for my acts. Do not misinterpret the sense of my words. I fear the reproach of my conscience and of the Ottoman nation. Beyond that I care for nothing. The Ottomans have their duties. They have recognised and accomplished them. We must imitate them. We are, above all, a Constitutional Government. Do you know the meaning of the Constitution? He who produces a thing should know what it signifies. I insist no further on this subject. I am aware of the importance of the post which you have confided to me. An Ottoman myself, and occupying a high position amongst my fellow-counsamen, I have a double duty to fulfil. I must know my circus an official as well as that an Ottoman. A Turk who havets his duty towards his country is responsible towards conscience; only a Grand Vizier is answerable wards both his conscience and his country. While I am proud of is that I have nothing to reproach telf with before my conscience. I am anxious to be as Soud before my country. For the last nine days you meeting in not accepting what I submitted to you. In other words you refuse to give the workman the tools he reduces. I cannot work without implements. Those of which I dispose at present -are rather made to destroy that to rebuild the empire. I therefore beg of you to entrust somebody else with the functions you have confided to me, \_\_Nidhat." It is believed that in dismissing Midhat Pasha the Saltan has committed a sin for which he - Will bear seriously to regret some day or other

The following is an abstract of the Financial Statement made by the Honorable Sir John Strachey, K. C. S. I. Thursday last in the Viceregal Council:—

Accounts, 1875-76: Revenue £52,515,789; Expenditure, £55,117,536, of which £595,779 for famine relief, and £4, 270,629 for Public Works Extraordinary: Deficit, £2,601, 747: Surplus, excluding Public Works Extraordinary, but not famine, £1,668,882.

Regular Estimates, 1877-77: Revenue, £51,206,700: Expenditure, £57,285,000, of which £3,8000,000 for Public Works Extraordinary: Deficit, £6,078,300, or, excluding Public Works Extraordinary, £2,278,300: Estimated cost of Famine, including loss of Revenue, £3,100,000: Surplus on Ordinary Account, Excluding Famine, £624,800.

Budget Estimates, 1877-78: Revenue, £52,192,700; Expenditure, £56,442,400, of which for Public Works extraordinary, £3,628,000: Deficit, £4,249,700, reduced to £621, 700 if Extraordinary Works be excluded. Estimited cost of Famine, £2,150,000, making £5,250,000 in the two years. Surplus on ordinary account, excluding famine, £928,300.

Not Ammount borrowed in 1876-77, £3,724,000.

Loans in 1877-78, £6,500,000, of which £250,000 from Sindhia for Gwalior Railway: of the remaining £6,250,000, the Government of India proposes to raise £2,500,000, in India. Government of India is not authorized to pledge the Secretary of State as to loans in England, but will recommend him to ask Parliament for power to borrow £3,750,

000 in England. No fresh Imperial taxation; but Bengal and the North-Western Provinces required to guarantee £375,000 interest on money spent on Canals and local Railways which are made over to Provincial management, and for maintenance and completion of which provincial responsibility will be enforced. This will necessitate fresh Provincial taxation, the maximum amount of which is estimated at £325,000 of which £275,000 in Bengal and £50,000 in North-Western Provinces. Measures for raising amount in Bengal not yet actually settled, but extention of existing system of Provincial taxation proposed, and no tax of novel character. For North-Western Provinces light license tax on trades; and authority given to assign for canals and railways ten per cent. of existing local rates. Large extension in Bengal, North-Western Provinces, and Oudh of system inaugurated by Lord Mayo of making over revenues and expenditure to Provincial uses and management: further development promised in other Provinces hereafter.

Programme for the future: unremunerative public works and famine to be classed as ordinary and provided from revenue; special measures for meeting famine charges under consideration; abolition of Inland Customs Lines and Sugar duties; equalisation and reduction of Salt duties; Government pledged to abolish import duties on Cotton goods with least possible delay. All measures of fiscal relief postpond this year fon account of famine. Financial position considered satisfactory and future promising.

Estimated bills upon India in 1877-78, Rs. 13,85,00,000. Present intention of Secretary of State to sell bills for 26½

lakhs a week during April and May.

Estimated Balances at credit of Government of India: at end of 1876-77, £11,539,700; at end of 1877-78, £12,500, 000.

The Amir of Cabul is said to be energetically sending his troops forward towards his frontier, and instructing his Governors to keep a vigilant lookout, and also to enrol fresh recruites to the fullest extent of their power.

It is stated in the Civil and Military Gazette that —

The Akhund of Swat has proclaimed a jehad, inciting his subjects to a hearty co-operation with the Amir of Cabul whatever may befall. Sick and weakly as the Akhund is, he is unable to retrain himself and remain quiet in these exciting times, but is ever busying himself with politics. The jehad engrosses him entirely. The roads in Swat are not available or safe for traffic, greatly inconveniencing the people.

In one hundred years the United States of America have increased in population from 2,750,000 to 44675,000, 6,000,000 are agriculturalists, 1,200.000 tradesmen exclusive of 2,700,000 proprietors of mines and manufactures, 2,600,000 professionals sub-divided into 43,000 clergymen, 40,000 lawyers, 60,000 doctors, 126,823 school-masters and mistresses, 5,200 journalists, 2,000 actors, 2,000,000 labourers and domestics. There are 74,638 miles of open Railway, 80,000 miles of telegraph wire, and 6,000 newspapers and periodicals. The area of land has reached 3,603,844 square miles and the annual value of manufactures is set down at 4,200,000,000 dollars. These figures are interesting, and show what the Teuton can do.

Since the return of Captain Nares from his Arctic expedition, and the announcement of his belief that an open Polar sea does not exist, others who heretofore believed that such a sea could be found, are discussing the most economical and practicable mode of continuing explorations. More than 250 expeditions, at a total cost of at least £25, 000,000 and hundreds of lives, have already been sent into the Arctic waters. Of plans which have lately been proposed, the colonization scheme is generally accepted as the best. Robert Seyboth, of Wilmington, N. C., who was two years with Dr. Hayes, has written a letter on the subject to a gentleman in this city. He has not the slightest doubt that if well-selected and resolute men could acclimate themselves to polar weather, the greatest difficulty in the way of a solution of the problem would be overcome. He is further of opinion that if men were to eat plentifully of seal, walrus, bear, and even whale meat, scurvy, the great enemy of explorers, would be avoided. The scheme, says the letter, in conclusion, "would strike at the root of former failures in Arctic explorations, for it substitutes the steady conquest step by step, in place of the spasmodic and unsustained efforts hitherto made at the sacrifice of untold treasure and the loss of great and noble lives.

From sources of information on which the Lahore paper can thoroughly rely, it says:—

have been carried on at Peshawur between the Cabul Envoys and ourselves have failed. The British Envoy at Cabul who has been at Peshwur, will no longer represent us at that Court, and the present position of affairs points to graver complications than have previously arisen. We also regret to learn the probable failure of arrangement with the Kohat Pass Afridis. Altogether the State of the Frontier must be regarded as affording little prospect of quiet times. Both the Amir of Cabul and the Akhund of Swat have been and are active in appealing to the fanaticism of their subjects; there is evidance of unison of action, and an understanding between them, and there is visible a ferment of agitation all along the line which can hardly fail to break out in violence for which it is necessary that we should stand prepared. But which to believe, the statement of the Lahore Paper, or the Englishman which assures us

The following peice of Cabul news has been published in the Civil and Military Gazette:—
Owing to the great delay which Sayad Nur Mahomed Khan has made at Peshawur, and the ambiguous answers which the minister has sent in reply to the urgent letters of the Amir, some of the Sirdars of the Court are disappointed of the result of the Conference coming out in accordance to their expectations.

that the frontier affairs have been satisfactorily

tow the gradiet believed soit sold and there

These men often quote the proverb—"
"The delay defeats the object in view."

settled.

Notwithstanding the agitation of mind which the Amin feels in expectation of the result, he tries his best to soothe the apprehensions of his courtiers by telling them that the English Government decide all matters, though they be of no importance, after a considerable space of time; and since the present matter is a serious one, having connection with the Frontier question, it is not an astonishing thing to see the length of time it would take for its coming to a conclusion.

The Turkish Parliament open ed to-day (19th March)
The speech from the throne admits that the gradual decline of the Empire is owing to a disregard of justice and the want of respect for the laws. Heavy armaments, it states, have exhausted the Treasury, and the reduction in the interest on Turkish stock has injured the country's credit. It is now proposed to offer to creditors a solid guarantee. The speech dwells on the reforms promised, and trusts that the issue of the negotiations with Montenegro may be peaceful.

It is with much pleasure that we quote the following from the Academy of London dated the 24th

"Ram Das Sen, whose essays on some of the principal facts of India have excited great interest among sanskrit Scholars, has just published a second volume, called Historical Essays (Aitihasika Rohosaya.) They treat on various subjects, the most important being, "The Vedas," "Buddhism," "The Pali Language and Literature" "The Indian stage "&c., An English translation of these Essays, or of a selection from them, would be welcomed by all friends of Oriental literature."

Many of our readers will be glad to learn that the third part of Babu Ramdass Sen's work is in the course of preparation.

A correspondent informs us that the man who touched the Judge of Burdwan with a razor concealed in his person turned to be a lunatic. He was sent by Mr. A. Barooah Assistant Magistrate of that District, to the Civil Surgeon for examination. The Civil Surgeon certified him to be insance. He was therefore let off by Mr. Barooah.

A cabinet Council was held yesterday (March 13th) to consider the fresh proposal made by Russia. Russia proposes that if the Powers will agree to sign a protocol, urging upon the Porte the acceptance of the original programme presented at the conference, she will act with them, and demobilize her forces. Lord Derby has promised an early statement concerning the decision arrived at by the Cabinet.

The Porte has rejected the conditions of peace proposed by Montenegro, which comprise a cession of territory and a seaport on the Adriatic.

General Ignaties has arrived from Paris. It is generally reported that England has accepted the principle of the Protocol paesented by Russia, but with the introduction of certain amendments by which phrases which find (bind?) our future action are avoided.

In the House of Commons last night (16th March) Sir Stafford Northcote, replying to Lord Hartington, said the report that England had accepted the principle of the Russian protocol but with certain amendments was true, and that Count Schouvaloff had received amendments ad refe endum, and now awaits instructions from his Government.

General Ignatieff is the guest of Lord Salisbury at his Country residence at Hatfield.

The special delegates sent by Montenegro to arrange terms of peace with the Porte now await instructions from their Government.

Warlike preparations are being made at Erzeroum, Kars and Batoun by the Turks, who have also placed strong garrisons along the Russian Frontier. Vengeful fighting has renewed in Bosnia.

Printed and published by C. N. Roy No. 2

Ananda Chatteriee's Lane, Backgrar, Calcutta,

তাহার শতকরা দশটাকা হিসাবে छেটের উন্নতির জনৌ बाग इहेर दित इसे इसेश हि । सि दित सार्थ अक्षांत्र जात्ना इश्व वाजित्रिक वाज्ञा वाज्ञा वाज्ञा विरिष्ठं त्र जातूमिक ल इंग्रा वाग्न कर्ना याईएक लातिरव। প্রকৃতপক্ষে যদি সম্পত্তির উন্নতি হয় তাই। হইলে উক্ত बाय बाता नावालकि पितात श्रेष्ट्र मन्न माधि इहेर्ड भारत। किन्छ वञ्च छोग्नरे जारा ह्य न।। गवर्गमे नावालकिप्तित्रात्र क्षिमपात्रीत्र छेन्ना जिना जूमि मन्नाजि क्य क्रबन ना। माधाद्रभित्र हिडक्त कार्या ताछा, श्रुक्षत्रिगी, জलएमह इंड्यामि क्रिय़ा थार्किन। क्रांन - एउटि छोक। मञ्चिक इहेटि (मञ्ज्ञा शवर्षिपण्डेत्र किनेनान विक्क। य म बक्तम ब्रांखांब, घाटि, मार्ट, थाटन बस्या व्यथां वाल कित वर्ष निक्य कित्रा वार्ष अधि व উন্নতি সাধন করেন। সার জজ ক্যাম্বেনের মত ছিল य नावानकिं निरात्र दिनान क्रां वर्ष वर्ष मक्षत्र ना इत्र, व्यथि ज्य मन्याजि थातिन ना इया मिरे व्यविध नावानकि निश्तित व्यर्काश्य मिनि প্রবেশ করিরাছে। शंवर्गिय (मरे स्नित्र पृथि जाद अर्थत कित्रवात जना यमि छेलि थे ज थतर हा त इकि कतात जि छा । क्रिया थ। क्रिन তবে জ्यिन। अनिर्ध्व विश्व मीम। नाइ।

वाग्यता "लिकक" नामक এक थानि श्रुखक किছू मिन इहेल প্রাপ্ত इहेश ছि। श्रीयुक्त वत्र नाकां छ मज्ञ मात्र जिति थत मर्था जिल स्राथित विकि विकि येख इंश्रंब প্রতে। আমরা এই প্রস্তক খানি পাঠ করিয়া विश्वाय मत्लाय लां छ क्रिनाम। य मि अ इंशा नवा छूमा , शिकाबी गार वत शरक विरम्ध छे शर्याभी, किन्छ माधा त्र व ः अकत्ल हे हे है। পार्ठ करिय़ा कि हू ना कि हू जान ला ज कतिएक भाति दिन। आभवा जतमा कि मर्मा मर्भावन विश्विष्ठ अभिना त्रान अहे श्रुक थानि अहन करित्री अञ्कादित छे भार वर्षन कित्रतन।

जुक्क मच अ किंग्या जक्त जिन जिक्न अखान किंद्र-তেছেন। তিনি ইউরোপীর গাবর্ণমেন্ট্রিগাকে ইছাই जानत्क উरज्जन। कतिशा वलून (व, इंडेरब्राभीश मृज्यान कनकादिका म ভाश यादा मानाख कदत्रन, जूल जान ভारा क्रिका जारा इरल जात मगत मजा। क्तिर्वन ना। इंश्लण अरे श्रष्ठार्व किंहू शतिवर्जन कित्रिश मधा जिल्ला एक । किनिश्रात पृज जिनादाल इशनाहिक लख्त (ना हिशाहिन ज्वर जिनि नर्ज मानिम-वांत्रित वांक्टिज जांद्वन।

"मिन(काना (कवां तिकिडेज" नामक এक ही डेश (धत বিজ্ঞাপন আমরা স্থানান্তরে প্রকাশ করিলাম। উহা कूईनाईलित পরিবত্তে ব্যবহার করা যাইতে পারে। मात्रिक्तिष्म ग्रेवर्भ्याणे व्र लाल मिन्द्राना त्रक्त जावान जाएक, উशांत काल इहेट अहे छेवश श्रञ्ज इहेशाएए। ডাক্তার চিবাস, ডাক্তার ইউরাট প্রভৃতি চিকিৎসকগণ পরীক্ষা করিয়া দেখিয়াছেন যে "সেন-(काना (कवितिकिडे (कात" छ। धात्र कूरेनारेतात कुना, माधात्र ज्व उक्ल जुद्र छेश निकि द्य वावश्त क्रा याहे (७ भारत। ग्वर्ग स्थले मित्रिय वा जिन्हित निक्रे উহা অতি কম মূল্যে বিক্য় করিতেছেন। সচরাচর कूईनाईन (यक्तश ज्यवशाय अ (य शिक्रियार्ग वावश्व र्हेशा था क हेरा असे कारी वावरात कति इश। (राग्निकाल गार्डित्व अधाक डाङ्ग् कि वामा-্দিগকে " দিনকোনা ফেবরিফিউজের" কিছু নম্না - পाठाईशा पिशां एक, जजना जाँ शां का थनावाप।

जुक् (क्र त्र) जात (जक्म, कात्रम छ (इ हिम मामक छ। (न यु बित मजा जर कम त्रा जात मग्र एथ रेमना श्राणिज क्तिएङ्। वर्मानशांश यूमलमान उथ्छोन्दित महिङ व्यावात युक्त व्यावस क्षेत्राट्ड।

#### বিজ্ঞাপান।

वृश्काकाकिगानि मटक काछी श्राष्ट्रक करा धदर श्रुद्राप्य, शक शको, (प्रबु बहुण, (क्र्नी यि

मामामि गट छ था गर्गना, मागू फिक छान् छान् छ मूल उ जनू गांत उ छक धवर मुखी खमरभाज थर ख थए अकामिन इहेरन्ट धहे शुखक खन्नभारम वाजीज मिका इहेरन। ओहक शर्वत श्रांज श्रांज श्रांज्य रिष ডाक्या ७ न वा जी ज।।। । वाना निर्माति इश्या ए । कलिकां वा पांडामां का लिव क्यूमां के, गलि १ न अत वाष्टिक आंगात निक्षे मूला मध्यक शंक शांशिह्ल शाहित्वन इंडि।

नी त्रांमक (यांच्न ठिखेशाशाशा

## ञ्च (त्र व्य रितामिन) नां हिक ॥

मूला ३ টोका छाक माञ्चल এक छाना। श्रिश्न श्रिश्न मकल श्रुडकाल ए यहे श्रीश्रवा। स्ट्रां विद्यां प्रमानित त तह शिं । व्यागि प्रि मकत्ला ३ के बेखा वा का जन। -- १ कि (ए। का)

मर्ख माधावर्गक ज्वां ज कवा याहेट ज्वा याणां हरते व मान बिल् विविधि किया विविधि किया मकत्लंत ३৮११ मोल्लंत ३ला ५८थल इहेट ३৮१४ मालित ७५ (म जिल्ला शर्गा कन्द्रोहे (म उर्ग याइटव। कन हे। छिन दिन बा भागा २० (म এ প्रान টে ভার প্রেরণ করি বেন।

शान्य (वाडेम वाश्वा वाश्वन প্রতি মানে ৫০০মন

व्यक्तिभा 254 বিরিধ ডাউল शाह এতদেতীত অহাস্থ্য দ্বা

(भार्य ज जवा मकत्नत मवित्भष जानित श्रांत्वन। डेशरत्रांक प्रवा ममख डेट्क्र इं तकम ना २ हेल कितंड र्रेष ।

শরিশা শুফ ও তৈল করার উপযোগী হত্তয়া ठाई। कन को छिनात इक्षा कतिल जिन ६६८७ रेजन, रेथल, गणिथलिया প্রভৃতি খরিদ করিতে পারিবেন किञ्च जे मकल फायां ब मूला उंशिक जक भारमं यथा निष्ठ इरेरा, এवः জেल इरे एव छै। श्रांत প्रोणे वक मारमत मरशा शो इरवन। शक्त शो धी उ ब्लोका स्थिति एक दिल जिल्ला प्राप्त जना कन्छे क्छेनात इक्षा कतिल धक कि वर्ष कर्वा छिखात क्रिड भार्तित किन् जित्र जित्र मत जन्म इहेल्ल रिखान वाद्या कि दि अर्थाति एक विषय वाद्या इहरवन ना।

Rutty Kant Ghose,
Assistant Surgeon, Jail Superintendent Jessore

INDIAN ASSOCIATION FOR THE CULTIVATION OF SCIENCE.

Lecture by the Very Rev. Father Lafont, S. J. this Evening at 7 2 P. M. Subject: Reflection of Light on Curved Surfaces, and Refraction.

Rules of Admission to Lectures of the Association Admission invariably by Ticket. Donors admitted free to all Lectures. Subscribers prepaying for the year or the month admitted free to

all the lectures of the year or the month respectively.

Admission Fee for non-subscribers—Annas 8 for a single Lecture: Or Rs. 3 in advance for 12 consecutive

Tickets to be bad of the clerk at the office of the Association between 10 ½ A. M. and 4½ P. M. (Sundays excepted), and on the day of Lecture up to the time of Lecture.

MAHENDRA LAL SIRCAR, M. D., 22nd March 1877. Honorary Secretary.

কলিকা ভার বহুবাজারের শস্তুনাথ মল্লিকের लिन निवामी यृज শञ्चनाथ मिलक (विद्यादनत छिटे उ जाजा मन्भि जित लि जिन कव अकि गन्दि मन् कर्शि कार्या চालाहेवात क्या शब डिब्लिश्ड युड दाङित विथवा खी ७ ऐन्तर्गिधकातिनी खीगजी तामगणि मागी वन (मनी । कि छ देनि श्वाह हो दे का है अव कृष्टिक

दिशंत एडिकी भागे हिति उ इंट व्हेटिक व्यर्श क्रत्रम भन भवकीय जलाका इहेट जांश इहेग्राह्म। हे उन खिटिं त मां तिक गर्न ख ख (मना डेक এड गिनिट्डे हिक्म व्यर्था९ छे क क्ष्म वा लांख मत्त्राइकार्तिनी क मित्न धवर छे छ मर्ग वर्ग १६ भा अनामा त राग स्थ मारी छ। स्व शोष्ट्रं कि दिवन।

२०इ गार्क ३२११।

स्ट्रेन हो लो এख (कार विहेर्न । Swinh te and Law Attorney.

## मर्वाम

—णार्गामी बर्ष निम्न लिथिज वाजिगान कलिकाजा ियं विमालिए यत्र वि, এ, अ का के जा है म शती का त शती कि क নিযুক্ত হইয়াচেনঃ--

इंश् माश्चिं — (तः धम छ। इमन ७ (क एडिन। जीक उ लागिन डाय़!— दिः इलाका अ अक বিডন ।

व्यात्रवा ७ शात्रमा— वह व क्यान ।

मःक्ष् ७ — (इ: ६क, ध्रम, वत्माग्राधाम ७ मिण्ड य(इमाठका नाश्यका

इ जिहाम-(तः एवलिए, मि, काईक व्यव हे, लिशबिज। मर्भन-(छा, इलिय़ छे छ उलि छे शिक्थिम।

भरनाविकान अ नो जिविकान — (तः (ज, तवार्षे मन अ वांत्र, शांति।

शमार्थ विकान-एज, डेइनमन, उ वम, व, हिला। ऐसि विना। — जाः जि, अयारे।

— मश्ताका मलीश मिश्ह डीश्त विवाह मित्नत छेश-ल दिक इंडेन। इटिंड প्राम्ति टिंतियान मिनन नामक श्रीत मगांदा वर्षनान कतियां थारकन। मश्विं जिनि छेज छे ९ मन छे शल एक ७०,००० इंकात्र छोका मान कति शा एक । मर्तिषा मिलिश मिर्र मर्तिषा त्रविष्ट मिर्ट्य श्वा द्रशिष्ठ मि:इ मनीश मिश्हरक कथन जान वारमन नाइ এবং ভাহাকে 'কুতাকা বাজ।' বলিতেন।

—लदकार्ड माद्द्रवत्र श्वादन दल, शि, शार्व माद्द्र छ्गानित জজ इइटनन।

— नित्रामश्रद्वत वायू इतक्यात शास्त्रामी वादिकात इहेवांत्र জना विलां ज्यां वां कित्रिशा हन।

— चूठात्र नामक नोलिशितित अक जन नीलकत जारात मिलोश लिकाशी द्वारा इठा९ वाइड इइंश यानवलीला मध्रम कित्रिश (इन।

— विठातथि । मार्कवि किलका ज। विश्वविष्णाल स्त्रत वाइम हा। नरमल इ इहरवन।

— शांजिश्र ७ जनिक्छेष्ट श्रामा ३४१० । १५ थ অকে যে অহিফেন প্রস্তুত হয় তাহার উৎপন্ন ৬০ হাজার (मार्गद्र दन्ती इहेश्राह्य। द्यां ७३,००० वाक म जहि-(कंग इंडेग्नाट्ड, व्याजि वाट्या २००० इंग्लांत होका वार्थार मयुषय वांक तम जिन कार्षि मन्ग लक छोका निष्ठे लखा इडेशाइ। जिन लक्ष ৮৫ हाजांत्र विघा ভূমি চাস করিয়া जरे छे९ शत रहेश (इ।

——इें छित्रांन (ডिनिनिडेटमत्र এक क्षेत्र शें धित्रक लिथिइ। एइन य शांत्रमा (मिंग्यून जनादाम नामक जात्म धकरी वर्गशिक जाविक उ हरेगार्छ। देश मीर्घ जिन क्रिका अ आ इ इ कि का व वर अ कि वरमत ३२॥ कि कि (मन (माणा भाउग्रायाहरन। जन्नजीज व्यक्त इहर्ड अंड करा १०० हिमार अर्थ উৎপन्न इहेर्य। छ्य यदमद शंक इहेल अक जन क्षरकत इव शंलाहेश या आता रम शक्दार २ (मोडिय़। शिय़) व्यवत्यदिव स्वितिक धर्त्र। क्षक अक थण । । । अब लहेगा त्र वदक मातिए छेना उ इगः किन्छ श्रेष्ठत होते का का व्याप्त को विश्व देश हैं। ड्यं क्रिया (मास सरमा भी जनन कि श्रेम्स यास्त्री उद्शद्त श्रीमा काम्या एएस देश द्रा स्थान स्ति स्वेत्त পर्याख क्षर COLUMN ACTUAL DESIGNATION न हेशा विक्रय THE PART OF THE PROPERTY OF TH প্রেরিভ হইয়

দিয়া কতব

निशारह।

医门室门图 管理的 医门门门

— উড়িষার মর্র ভঞ্জের মহারাজ। ভারতেশ্বরী छेथमव छेशनएक कहेक कल्लिक अ त्याष्ठिकल कृतन ७००० छोका मान कताय वाञ्चला शवर्व यत्तेत धनावाम वाश रहेशाद्या।

— मिछी त गो हिल् गिट हिल्डेम नामक 8611 (मत अप्रात अकिंग का गांन अञ्चल कित्र शांद्रन। डेश कूष कामात्नत्र नाम् भाष्ट्रित छेशदत्र तिक्छ। छेळ कामात्नत्र छी नल। स्था या इटिंड्ड् (य, छेश्ट अंडि मिनिष्ठे गार्था ७ শত वात जा छत्रा छ इहरव। इंडेरत्रांश जाज काल यन्ता इंडावित डेशांव डेखांवन लहेशाई (कवल वाख।

--मिछे इेशक व वव्रक वारमाश्रीगण ध्वकाम करि-श्राट्म (य, जीश्रकांत्नित वाणिका जना यङ वत्रक व्यावगाक जादा जादात्रा मक्षत्र कित्रताट्य । ३२ इहे। ज 38 इंश्व शुक, जुवातम्या जाजि छेत्रम नत्रक मिश्विज इडेशाएए। इफ मत्नव अक (कांन्शांनि २४०,००० हेन अ व्यमगाना (काम्लानि ३२०,००० हेन मध्य कित्रशाहनः षात्रान ४००० शत्या अवानक ध्वर ७०० षात्र बरे कार्या नियुक्त हिल।

— इंडे ना इंटिंड (छंडे मगुर इं नक् रिगडिंग इ मश्वाम शंब मकत्न ध्वकानिङ इरेशांट्ड (य, दान माद्दव वाष्ट्रां खात्र। नशदत्र जाश मिवात य छेशात्र छेखावन कदत्रन जारा जथाय भीख भनीकिं स्ट्रिंग। छेक छेभारम नशंत्र विजागं कतिएक इड्रव ७ थार्काक विजारा कंकक श्रांल करिया वधलात तिक्ठ इरेट्न अवर जारा इरेड य जकन घत शंत्रम कतिए इहर्व जा शंद नन याहरव। धाई क्रिश हरेल लक् लाढिब नग्रवामी ग्रंग या या इंक्ला करम भ्राइत जाश त्रित उद्योग कत्रित शा महत्रत (ला कि এथन (यमन घर्त विमिश्रा जल ७ व्या ला भाइटिएम, अई भरीकारिए कृष्कार्या इहेल भीड काल जामादित जात- लिश, ভোষক कि गांव वेद्धत व्याद्याजन इंदेर्वन्।।

—চট্টগ্রামের অন্তর্গত কক্ষ বাজার হইতে হরিপাদ घाष, काञ्चनभा "श्लिमगानि" लिथियाहिन य जिनि এक पिन देवमाकल পाशां एक कार्या नियुक्त ছिल्लन। बङ्क्ष পরিশ্রম করিয়া ক্লান্ত হইয়া একটা গর্জন রক্ষের विशास विभिन्न । जना स्थिष्ट । लाक (थात्र । क्रिन । क्र घकीत मश्रा (लाक फितिय़ा आमिय़ा विलल जल शां ध्या यांग्र ना। পিপদায় অত্যন্ত কাত্র হইয়া বদিয়া व्याद्वन रेजियद्या (मृद्यन निक्छेष्ट शाराफ् रहेट इरे खन यगं আभिতেছে। তিনি তাহাদিগকৈ मक्डि म्वाता जाशत निक्रे जामिए विलिन। जाशता निक्रि আদিলে তথায় জল আছে কি না সঙ্কেত দারা জি-জ্ঞাদা করায়, তাহারা "না" বলিল; কিন্তু তাঁহাকে णशिमिद्यात्र मद्भ याहेट हिन्छ कतिन। किছू मृत গিয়া তাহারা একটা লতার কিয়দংশ ছেদন করিল ावश डो हो अक्षी वाँदिशंत नदलंत छेश्रत ताथिल। दकांत्राता इंडिज (यक्तर्भ (यदिश जल शिष्ठिक इस (मई क्रश (यदिश छेक लगात ছिन অংশ रहेट जल वाहित रहेग्रा অভि जाल्ला कान मध्या नली পुतिया (कलिन। जात्र ज्याम्ह श्वांत विषय এই यে পान काल जिनि श्रक्त जन পান করিতেছেন কি লতার রদ পান করিতেছেন তাহ। আস্থাদ দ্বারা বিভেদ করিতে পারেন নাই।তৎকালে छेक मणात शव ना थाकांग्र जिनि जाशत वर्गना कति। भारतन नाई।

— गांजाम (थिमिए जिए जारांत (एक जुत जातंत्र रेरेशांटिए।

— वार्याशात रानात उनाउं। वाङ डीवनंतरभ भारत रहेशार्ड अवासकं याजी मतिर उर्ह। अथारन धवात या मित्र मश्था। धण जाधिक इहेशाएल (य, ज्ञांत्नत मिन शंतरशादान विद्या नाज नाज याज याज्यात थानि नके क्रेबाटक।

—(बार्ड बाब, द्वादानिक) बादम्भ कविशाद्य एव थारणक जिल्लिस मन्द्र अ अकजन जामिके। के वार्षना डिः कारमञ्ज का। को विकारगत कात थांश रहेदनम । जिस कारमहैदत्र व्यथीने थाकिया के। स्थान

मश्वतीय मगूनय कार्यात ज्जावधान कतिर्वन । किन्छ काल्किरतत य मकल विर्णिष क्रमण আছে তাহা তিनि व्याश्च इहरवन ना।

— ভারতেশ্রী উৎসব উপলক্ষে বরদায় আমো-অভিনয়, ভোজবাজী ইত্যাদি অতি উৎকৃষ্টরপো मन्भाषिक इहेबाएए। वर्ता (कवन आनम नहतीए न् जा कतिशाष्ट्र। किन्छ याजाम ७ (वाषादेत लाक मिरे नगर शरे हा जन, हा जन, कित्रा लालाशिक रहेशाहि कड জन काल आत्म পতिङ इहेग़ाइ डाहाई वा कि

— এত কাল পরে গয়ার রেলওয়ে হইবে বোধ ইই (उट्हा गवर्वयान्छेत डेशप्तमाञ्चात अकणी (का-ম্পানি খোলা হইয়াছে তদ্যারা বিশ লক্ষ টাকা অংশ দারা সংগৃহীত হইবে। প্রতি অংশের মূল্য २०० টोका। भग्नानीता कूरवरत्रत जुना थनी, जाशाता यत्न क्रिल डेक मय्छ छोका मिल्छ मिए शाद्वन।

— कतामी পालियात्यकि भिका विषयक आहत्वत अकरी পাণ্ড निशि অর্থিত হইয়াছে। তাহার উদ্দেশ্য এই य वोलकिषिशांत निकि इरेट कूटल পড़ांत (बजन लख्या इहरव ना।

—শুनो यारेटिङ (य, मांशाटित वार्थन उथाकात इंडाफि जां जिपिशांत निक्छे धई यार्पा पृष्ठ (প্रत्न । कतिशाष्ट्रिन या, তাহার। धर्म युष्कत জना প্রস্তুত ठाशामिगाक वाञ्च मञ्ज वन्त्र हेगामि श्रमान करता वाथम रेक्टी कतियाद्विन या, व्यमजीवी अ विविक ভিন্ন मगर्ड लाक यर श्रधारनत जभीत युक्त कार्या প্রবিষ্ট হয়। প্রধানগণ তাহাদিগকে যুদ্ধ সজ্জা দিয়া युका निश्चाहरवन।

— (मिषकल कलाइन खिनिम् छ। भिर्थ २० মাদের বিদায় লইয়া গত রবিবারে কলিকাতা পরিত্যাগ করিয়াছেন।

—(बाबाइटिंड ०४ ी कार्याड छ ख्वांत कल আছে, ইহার অধিকাংশ এদেশীয়দিগের। কলিকাভায়ও ত निक्रेवर्जी श्राद्य 810ी कन आहि, किन्छ जाश्रत অধিকাংশ বিদেশীয়দিগের। (বাদ্বাইৰাদীরা যেরূপ উৎসাহের সহিত কার্য্য করিতেছেন তাহাতে বোধ इय उँ। हाता भी खरे गारिक की दिवत विभिक्ति विभि इहेट विहिष्ठ कतिर्वि। আমরা ভরুদা করি किनिकाणावामीशन (वाद्यादेत शंथावनद्यन क्तिरवन।

—(वार्धेन विश्वविদ्যालस्त्रत অध्यार्थक (वल माद्यव একরূপ উপায় উদ্ভাবন করিয়াছেন, যদ্ধারা তাড়িৎ वर्जावश्याता अक्षान श्रेट कथा किश्ल जना श्राति (महे कथा व्यविकल खना यात्र। २१० श्रात इंहात शतीका इहेग्राष्ट्र अवर अना यात्र जाहा मन्भ न कुठकाया इरेशाएए।

—भातिमात ভৌগোলক मयाज পण्डिं नश्रां मिश्हरक এक नि अवर्ग घिष छे शहा त कि शा हिन्।

—वश्त्रमश्त कल्लित थिकिशन (वलि मादिव ताजमा शै विভाগের क्रुल मयु इत्र है दिल छ त इहेलन। मश्कु क त्लाद्भात थिकिन्। ल वातू थमत क्रांत मर्काशिकाती (वटलं माट्यत्वत शाम नियुक शहलन उ পण्डिज यहिंगांच्या ना। अञ्च मःकृ क कालां ज्ञ थिजिशन इहेलन।

—मात्र জर्ज क्यां स्थल (बर्गत विভाগের জন্য এक ব্যাজিকে মাসিক ২০০০ টাকা বেতন দিয়া ওয়ার্ডস ষ্টেটের কমিদনার নিয়ুক্ত করিয়।ছিলেন। বেতনের छोका नावानकगटनत्र एछछे इहेटड मिटड इहेड। खना याग्न कार्यम मार्व डाँश्व এकी थिव्रभाद्वत उभजी बिकात जना अरे भएणीत रुधि करतन । (हिस्मान मार्ट्यत जागरन अवे श्वा किन ; किन व्यागता (पथिया मछके इहेन य (य, बर्ज यान (लः

গ্বর্ণর সেই স্থানে পাঁচ শত টাকা বেতনের এক জন্ मार्थि অञ्मक्षान क्रिय़ा (मिथिल नावानक्रियांत वर्थार्थरायत वात्र वात्र वात्र वात्र प्राप्त प्राप्त वा

— (किनि जार्व किंगि शिले किक्न श्रुल अ थिन्दमर्थ मार्घ्य জियम (कन्त्र) ऋत्न शहेरकार्धित জজ इहेरवन। लरकार्ज मारह्व २८ প्रज्ञानात জজ याकिलीन मार्टिक > वर्मात्रत हुती लख्या याँ श्री श्रामि को क तिर्वन এই क्रश विद्याविख इहेशा ছि।

—রাণীগঞ্জের মাজিফ্রেটের সমীপে একটা হত্যার याकष्मा उपश्चि श्रेशाष्ट्र। जाशांत विवत्न वरे। जिक्र नामक धकजन माजाजी थृ छान उ जाशत जी, निकल-मन् नामक এकজन कटि। थाकाद्रित अथीन ठाकत छिल। ডिকের खी हिगली नामक এक জন সাহেৰের সহিত ভুদ্টা হয়। ডিক জানিতে পারিয়া তাহাকে পাপ कार्या रहेट वित्र हरेट वात्र वात्र वात्र वात्र क्ष भा তাহাতে কর্ণপাত না করায় ডিক এক খানি ফুর দারা खीत गला कारिया (कल्ल अ পরে আপন গলা কাर्টिङ यात्र, किन्छ তাহাতে कृठकार्या হয় নাই। ডিক মাজি-ফ্রেটের নিকট অপরাধ স্বীকার করিয়াছে।

— वत्रनाता जात थना भारत था य এक काछि छ।का मिश्रिक इरेशां ছে। মন্ত্रीवत मात्र याथव ता अ छ। का (তছেন। তিনি শতকরা ।।। টাকা স্থদে ভারতবর্ষের गंवर्वयिन्टिक १३ लक्ष छोका अन मिट श्रञ्ज जार्इन। वे छोका दात्र। वत्र वाद्यात्र मध्य क्रिया (य त्वल अद्य গিয়াছে তাহা বিস্তার করিয়া বরদার প্রান্তদীমা পर्यास यात्र এই তাঁ हात অভিপার।

—वनविक्षु श्रुद्वत ताजात मृज्य इहेबाए ।

— शं > > रे मार्ज वाद्य किनका जा स स ज अ भिना था ज इरेश शियाद्य।

— गठ : ७ रे मां हे जाति एथं य मक्षा है भिष्ठ है ते जा होत यरधा मालावात, देकचा है ब्र, क्रका, कमाशा, कर्नल ७ जिन-वलौरिक आ इकि इकि शांक इहेशा किल। इर्जिक शी एक वाङि मिरगत माश्यार्थ तिलिक कार्या ५४१,८५४ जन काज कतिराज्य । त्याचा इसि इस नाई। मही स्त इसि रय नारे; जथाकात श्वालक अयार्क अ तिलीक अ-शार्क ५৯,००० काज कत्रिष्ठि । यथा ध्वाप्त किथि । वृक्ति इरेशार्छ। मरमान्न जान्छ। जाना (वन्नार्त्न माना कर्जन इरेश जिम ठाय इरेजिए। श्रेजशूजना अ मधा (मर्भ बाज़ ७ मिला थां ७ इहेश । जा जा नात्र जात्नक প্রদেশ त्रिक भिलाभाज इहेशाएक, त्रि भारमात्र छेल्भन छेख्य। मौत्रहे, जागता ७ त्राहिन थए जन्म २ त्रिक इहेगाए । व्याधात्र अ इसि इरेग्नाइ । श्रिकादित मद्धा मिलि, জनमात्र, नार्यात ও तात्रन शिखिए इसि इसे एर्याएए। भारमात्र जावस्था जान। जामारम त्रुक्ति श्हेत्रांट् । जीश्द्रि वात्र शक्ति वात्र गात्र

— (कर्त्रा इरेड मश्याम आंगियां हि (य, कर्नन गडेन रेजिएखत (थमादतत अधीन त्मीमान ध्वरमन मकल्लब श्वर्वविद्यां बेश्रंब कर्क् च जात थाथ इ-इया नियुक्त इरेगाएइन। এতদ, 'ता जिनि ममाक् तर्भ माम वावमादात छेशमम क्तिए शाबित्व ज्त्रमा इइएउएइ।

— १७३ मार्ह मन्नाम्य मग्र इरे गांकि उन् ए किमि (श्राष्ड् मिश्रा याहेट जिल्ला हाष्टिकात खिल्मू जिंत निक हे তাহারা রাস্তার এক পাশ্ব হইতে অপর পাশ্বে যাইতে-ছिল। इंडि मध्या এकथानि गाड़ि जामिया जादामिशा এক জনকে অতি গুৰুতররপে আঘাত করে আহত ব্যক্তি हिधिकी श्रक्त जार। त नाणिए जानिया जल्लाकान मधारे यानदनीना मच्यत् कित्रशाष्ट्रिन।

—शं अविवादि मक्तांव किथि १ शूर्व शंव छात्र हिका-**छ**शाला शाष्ट्रा बाखन लाशिया थात्र ३०० भाउ घत পুডিয়া গিরাছে। ৪টী অগ্নি যন্ত্র দ্বারা আগুণ নিবাইবার (ठकी करा इरेगा हिल।

—(वादाई अमान्याद्याद इहिंदिक व ममज। इस नाई, क्रिन्नान इश् क्रिय त्रिन इहेटन्डि।

—लाटशदत त्राष्ट्रे य किलायगंग ठात्र जुरेट टिमना अ त्रमम मश्याद क्तिएक ।

— एक छान कात्रामी छात छवर्षीय श्वर्णियण्डे तिर्णार्छ कित्रशिष्ट्न (य, तून) त्नित्र थोश मधंड छ। त अहिएक न উৎপন্ন হয় ও উহা তথাকার প্রায় লোকে ব্যবহার कर्त्र। ज्ञा ज्ञा इश्लिम भागिर्याणेत ज्ञा जिल्ली ख्रधान लारमन প্राथमन वाकिः, युक्तां व अममानि काकात्मत श्रीक उठ यूथकत इहरत न।।

— जाभोत्तत (जार्छ शूव हे जांकू व थाँ जम्माणि कांवा-शारत जाएन। खना याहर जए कर्छात मामत्न जांशत मिखिक विकृ इ इरा शिया हि।

—काबूलद वागीततत वाखानूमात कामाश्रत श्चर्वत कान्माश्वत अ कान्माजितिष्ठितिष्ठानीत लाकिम्भिक वान कि युष्म ब जग श्रञ्ज इहेट जारिन ने कति शाहिन।

— इश्ािमान व्यवशं इ इर्शिष्ट्न (य, मृ ड जश वार्।-इद्वत ७ जी खो मश्-मत्र विश्वार्शित । जामना खिनिया जि य उँ। इात्र क्लिन जिन महियी उँ, इात्र महिज महमत्र शयन कित्रशास्त्र । यिनि अ इश्द्रका धिक् जात्र जित्र देशदब्जान "मडी" किया वादेन घाता ऐठाहेश निया-(इन, ज्याधीन तनशाल त्रांटका छेश जागाशि धार्हालंड जाट्य। यनुग ऋष्ट भारी दि इष्या करिया कथन स्थीय श्का खोकात करत ना। विश्विषकः जाश छारा जाशन - भं भी तरक मक्ष कता इशा थान विद्या न कता नार्थि मञ्चात्र महिक्ष जात्र गिजित्र जा। এक जी जाज नी एक वा दी नाशितन महा इश ना किन्छ এक জब जवना महामा व पत्न मन्छ छ-हिटछ जानाशाय जिथि हिजा जार्या इन क्रिश जीवन जाश कि विज्ञा अधि कि मात्र्यिक जादवत्र कार्या ? (य सामी क मिन्छ। विलया जात्म, सामी त जीवत्म यादात জीवन, आभीत প্রতি যাহার এমন অচল, অটল প্রেম - ध्य ত। श्राद्य विवर्ध मि किছू ए छ ने बन भारत करित्छ ञक्ताः, य मत्न पृष् विश्वाम करत्र य मृजू जा उ मा यागीत मं इंड जन ख यर्ग यूथ (जारा कतिद्व, (मई (मर्वो क्रिभी त्रमणीरे (कवल পতित्र महिक मर्मत्रण याहेर्ड পারে। সহমরণের যে দোষই থাকুক, ইহা যে সতীত্বের ও পতিপ্রেমের মণিমুক্তামর উজ্জ্বল স্বর্গীয় শুশুস্করপ তৎপ্রতি অনুমাত্র সন্দেহ নাই।

—निमान जज (ज, मन द्रा माट्य द्राम श्रेनीतमत इन् तम्मली (जारनतन इरेग्राट्न।

— ७३ याळ शर्याल याजाम मश्दा इंडिंक जना ३०,३७,३१, छ।का अ निजल गरे (जनाय ३१४०४ छ।का श्वर्षिण द्वाता वात इहेगाइ। डेक दिन्नात खिंड मिन 3,809 जान कूली तिलिक कार्या कांज कित-তেছে ও ৮৫৯ জন দরিদ্র ব্যক্তি অর পাইতেছে।

— এক জান রসায়ন চিকিৎসক অতি অপা ব্যয়ে মৃত (म र दक ज्या कि श्रेमार्थ श्रिशंक क्रांत छेशां छे-छ। वन क्रिया छिन। छन्विश्य अञ्चा मृञ (पर्-কেও আপন ব,ৰহারে প্রয়োগ করিতে ভদ্যত।

—विशिद्धादित जात करों जगड इहेशादि (य, मित्रिज পাক করিয়া আহার করিতেছে।

— ১১ই মাচচ রবিবার দিলাতে ঝড় ও বজাঘাত इर्झा शिशा (छ।

মহাশয়,

व्यानक मिन भूटर्स महाभटात विधार के शिवकाट क णांगत्रा त्राज्यत्र होछेन मिडिनिमिथालिहित এकही जाउग्र-চারের বিষয় প্রতিবাদ করিয়া লিখিয়াছিলান। উখিলা नादम अक्षी शिल्ल, याश कृषिकी वित आवाम, क्षे शिल्ल-हिंदक मिडेनिमिश्रालिंग वाद्यर्गक कित्र्या क्य निर्माद्रश शर्याख इहेग्राहिन ७ महाभारत्रत्र निक्छ को चाउराहार्त्रत शश्यांन ना शोठा हेटन द्याध इंग्न वक मिटन मीन आका-

शर्भित्र निक्छे इहेर्ड छेग्रांका जामाय इहेड। किन्छ जामत्र। विश्वंख (लांक गृत्थं खनिलांग (य छे छ । खखावि भारि প্রেসিডেন্সি ক্মিশ্রনার সাহেব ঐ আমের প্রকৃত তাবস্থা জানিতে চাহিয়াছিলেন ও যেপার্যান্ত না কোন স্থিরসিদ্ধান্ত करतन जाव थे छा। आ जामा त्र इंटिज त क्कू म (मन। চেয়ারম্যান অবস্থার, বিষয় রিপোর্ট কয়িয়াছেন কিন্ত শেষে जागा इजि (मछशा इहेरव कि ना जाहा व मन्त्र जा मता ध शर्या ख भिर्द शिव शांव नाई। क मिलना द मार्ट्य পর বোধ হয় বজেট লইয়া বাস্ত আহেন, অথবা তিনি मिकि कड़क इडेग़ाटइ, किछ जी ग्राम थानि ছाड़ा जगनाथ পুর, পাকপাড়া প্রভৃতি আরও কয়েক খানি গ্রাম জ আরম্ভ করিয়াছে। সম্পুতি জ রাস্তার যাত্রপুরের क्रिं जना। त्र भिडेनिमिशां दित जलर्बा करें। इहेत्रार्ड, निक्टे धक्दी कनराउंचल कि निर्मत क्रिंश क्रिंश जारा विश्वा जारात আমরা উথিলা সম্বন্ধে যখন প্রস্তাবটি লিখি তখন এ জিহ্বা কাটিয়া লইয়াছে, চক্ষু অন্তে দারা বিদ্ধ করিয়াছে বিষয় সমাক জ্ঞাত ছিলামনা ও সেই কারণ প্রাম ও অন্য প্রকার কুৎদিৎ যন্ত্রণা দিয়াছে। কি কারণে গুলির বিবয় লিখিত হয় নাই। আমাদিগের নিবেদন ও কে এ কার্য্য করিয়াছে তাহ। অদ্যাব্ধি প্রকাশ পায় এই যে মফঃশ্বল মিউনিসিপাল আইনে স্পান্তাক্ষরে নাই। অপর রাস্তার রসা ও তাহার দক্ষিণ যে সকল লিখিত হইয়াছে যে, 'যে প্রামের অধিবাসী সংখ্যা স্থান আছে তাহাতেও নানাপ্রকার উপদ্রের কথা অধিকাংশ কৃষিজীবি এরপ প্রাম মিউনিসিপালিটিভুক্ত ভানতে পাওয়া যায় ও পড়িয়ার দক্ষিণ কামালগাজি इइँदि ना।" आंभनात द्वाता मितिस ल्लाकि मिरात (य अई मह९ छेश कांत्र ञाञ्चित्र इहेशार्ष्ट् उद्धाना जाशान वांगामित्रांत विद्नांच धनावात्मत शांव इइंग्रांद्वन मर्न्पर गहि।

মহাশ্র, আমরা আরও আহলাদের দহিত প্রকাশ করিতেছি যে, যে কয়েক খানি প্রাম লইয়। রাজপুর छोडेन इइशार्छ, जी ममख जीरमंत्र जजात्मक ममर्वन रहेश। এक ही मङ। छ। थि इ इशार्ड, छ इति नाम त्राज्यत व्यथान छेएमना मिडेनिमिश्नां ज्ञां हात्र निवादन। इंडेन षात्रा (य व्यामामिरशत (मर्गत छे थकात इहर वना व'छला। जारकर्भन विषय ७३ (य कान मश्याम পত্তে এক জন পত্ত প্রেরক, বোধ হয় তিনি এক জন मिडिनिमिशाल किममनांत इहेर्वन, यिनि डिशिलांत डेशत छ। अ थार्थ। कित्रश विखेनिनिनाल जाय हिन्निकि त्रश वार्श्वत निट्ड (इसी कित्रिशिक्तिन, स्मर्श्वार्र धरे मड़ांब विद्याभी। जिनि समाय खकाना मन्गोषक बीयुक वार्तिक, नार्थ बिष्णां ज्यन महाभया क व्यागक विषय वा वागांत्र मिषिद्रां कि कित्रां हिन, कांत्र जिनि वह मजा श्राभात्नत वक जन खगान छ : मार्गी। वागता ऐक यश्वाति जिन्नाम। कति य उँ श्रित मंड वात्र कड लांक धइ मडांत विद्राधी वार्ड्न ? जिनि অনু श्र श्र क म डांत वित्रां भौ मिर्श व वाग मश्यां म श्र ज প্রকাশ করিলে আমরা ভাঁহার নিকট বাধিত হইব। विधि इश मिछेनिमिथाल किंगिश्वात वाडीड जाना (कइइ এই मङाएषछ। नट्यम । जिनि य कि कांत्र शिविद्याधी তাহা আমরা বুঝতে পারিনা। তিনি সোম প্রকাশ পতে উथिलात প্রস্তাব সম্বন্ধে যে উত্তর প্রদান করিয়া-ছিলেন তাহাতে আমরা ব্ঝাতে পারিয়াছিলাম যে देशिलां एक है। इस अहे डाइ। इस का जिल्ला का कि इंश्व श्रिविशन कति । ति । श्री श्री हिल्लन, य देशिलानियामी (लाटकता वानमात्री, कृषिजीवि नद्श। याद्या इडेक व्यामना वकलाएं मार्ट्यन निकंड व्यार्थना क्रिय जिनि कृषि शक्षि छिनिएक मिडिनिभिशान याम इहेट बक् किक न।

পত্র শেষ করিবার পুরের মহাশয়ের নিকট আর इहेट अंखि श्रेय शंभन क्रिट इहेटल प्रहें शिथ जांट । भारन मिलिशांटक ও विकीशंजी वालिशंख, जाइश्र अक्रि श्राद्यत यथा पित्रा थे भारत थक विन् मिलि इरेश हि। कलिकां जो ब किन शूर्ष दिन अद्या था वन इहेशा शर्या ख वरे इरेंगे दाखांस त्य शिवियात्व ल्यात्कत्र शंयवाशयन हिल अक्तरने जारी जारीको जात्मक किम्रा शिशादि। क्षकारेश शर्या अविषय माहति । माहति व्याप्त । ज्यानी श्रंत,

কলিকাতার ঝজারে বিক্রার্থ আসিত তাহারাও একবে (छोडे दइल उद्या शंयना शयन कद्र, कार्रन जार्म जार्म জना अञ्ज जल्ला मूला गांडी व वस्माव इ इर्बाइ जाकार्ज भवन्त्यर लेखा क्रेट्डिए । अर्कायन मिना जारा जाराना जानी एक की घूरे भारा है लाक मर्या णिं जिल्ला (मि. शट्ड शांउरा यारा। जहें इहें हि शट्शहें मन्त्रा ७ जकरबन जम इहेगारह। दानिए जशका मिका ভार्श এका शांडेलिई मातिशा धित्रिश, मदल यांका शांदक, काड़िया लहेगात (ठकी करत्र।

वालिशास्त्र ताखात वालिशास्त्र मिक्न नाशाहर शिष्ता श्री अवा यह वक यह मूननमादनत वम् जि वाद्य त्याथ इश जाराशे वह संग वाजार त कर्ताः नामक खकती छान, यथातन श्रांत अकती थाना हिल, ज्याञ्च त्राधिकारल पका भाइरल थ्यात्र शुखक मा यांश थादक जाश वलश्यक जाशहतन कतिया लया वामता ডिकि के ज्ञातिए एए मार्विक व्याश कति (य जिनि ज्ये मकल छाट्नत जा जा जा विवाद दिन कान डेशा र डेड्रावन ककन नटिए श्रामित्रात इश्रभन व्यविध शाक्तित्व ना।

अाजि रेत २२३ का छन। । जाननात जारू राज।

शब (थरतिकत थाछ।

शशिक - वन्धादमत्र शिभु दशदिदलत्र इत्रस्त्र दिया लिथिशां इन (य उशांकां द्र कान वाकि इरिटिल शहरन णशत गांकि जाशांक निमा करता श्रीयंक उड़ा गा, उ छेक (श्रिक्त तकक बाक्तानद्र इद्रवस्ति कन इः थ थकाण कतिशाह्य। बामाण ठाकती छाड़िशा य বাৰদায় আরম্ভ করিয়াছেন তাহাতে পরিণামে তাহার शदक जान इहेरवा याशीन जारव याहा कवा याश ত। ই ভাল। তবে তাহার গুরবস্থায় বিষয় পথিক ষে लिथिशाट्डन दम्ही कान्याशी माछ। श्राहियांशिका ना इहेल कान विषय कृष्कार्या इष्या याग्रना।

बी—इष्ट्राइङ बार्रिंग (जारेश वर्ग वर्ग क्रिया अकथानि ज्यमीय श्व लिथियाद्वा वात् महिमां बङ्गन त्रांश कि श्रित छ छ छ ज गून (मद्यन छ-(भागित्य ज्यात्र नानारिय महकार्यात जानूकान इहेट इह छेखत बांधाना दबन थुलिटन ज्ञामको टोकि मकन স্থান। खिंद्रिक इहेश। (यर স্থানে মহাকুমা আছে उथा स योहेट्ब, खब्बना পত প্রেরক ছঃ থিত इहेगाट्ছन। তিনি लिथिशाएएन তादा इहेटल ट्यांडेमानीत सूनमको (मीन-পুরে যাওয়ার সম্ভব এবং ভাষাতে মধ্যস্থলবাদী गांकिषितांत योकर्मगा कता अजान करोकत अ गांत माथा इइत्ता

बीजांद्रक भाश उछां गर्ना कि शिवादिन य जिलांक श्रुद्रित बाखर्शक (मक्मनन नागक श्रुद्रिन अक्ती हर् (मना इहेश। थएक। उथाय इंडि, (घाड़ा, डेडे अ नानाविध शंशी खरा रह ' मत इहेट विक्रार्थ हैशिक के क्या किन (यलां के जिल्ला विश्विनिर्शित निर् করি এরপ इख्या ऐहिन्ड

मड़ा है। त-षिद्शंत्र माहाव মলমূত্র ই চুৱাল मश्कीर्ग (य क न्तीत था द्वा द्वादकत नाम शाकाश जशाश शिक्तिश

व्यमखर, व्यवतार (लाटक वाधा इहेशा मश्रमात्न यांश। किछ उथाकात जिथ्नि नाजिए हे छक्न फिग़ाट्डन व या मृति मृति हल उठ मृत्तत स्था स्था स्था स्थान दिन दिन स्थान-जााम किर्दान मणनीय इहेर्नन। हेर्गटक ल्लारकत ज्यानक करखेत काञ्चन इहेबार्छ। मलजार्भत कछोर्भका आत्री विक करने अ भागि जात नाई। जामता खत्मा कति विकला जियोहि यांचू हेश्त व्यक्ति। व्यक्ति।

बिक-मिकिमशूरा मिकिमशुर्व धकरी वार्डे शिष्ठे श्रीशिक इहेरवा श्रेज ध्यात्रक खिनियादिक्न एय छेङ व्याकित्मत कर्महादीनितात (वजन उ यत रेजानित व भंद्र शिष्ट्रिय जोशा शावनी, मन्छे नांकि जशाकांत मिन इःशि शिक्रीत्र होत्री होनोई देन। ध अन्तर्न मञ्चर इ विष्या ।

वीगनी कृष्ण भन्मण्ड-लट्का व यञ्चाय मामान श्रम्ब किथा वनामा लाक हिटेच्यी गांकि मिरांब न्त्रशामिषि" में जात्र जात्र में जा के इंट्रिक काल (लोक में गोरांक इय विनियो इशिष्ठ इहेशार इन ७ लिथिशार इन य उथाय भाषा वाणि बाक्ता ट्डाजम इहेटन भूटपता वाक्षनामि शतिरामन कर्त्र डांश्ड शक्ट थंत्रक इंश्डिं। शब धात्रक (य मश्याम शाष्ठाहरवन छाहा अहरणाशरयाशी हहरन व्यागता मामदत्र अर्ग कतिय। शक् ध्यात्रक खांकान ভোজন ইত্যাদির সংবাদ না লিখিয়া সারবান বিষয় लिथिएवन।

बी—वर्कमाध्यव गुल्मदक्व विकल्क लिथिशाद्वा यां निन ना मधाय ना निधित्न वां भना त भव क्रां करा चाइटड भारत्र गा।

| अक्ट्रेस्टल ब स्नार्थाधि  |       |
|---|-------|
| नाइ दिवा शोम, भी शोम भूत  | 3.    |
| मात्रकल ला हा बती, मूजिम भाक्ष, जांका   | 30    |
| श्चित्र वातू (इमहस्म वल्मााथाधाय, थिमित्र थेत   | >e    |
| ॰ । किनायहस्य जाहाया हो यूत्री, युक्शोहाः   |       |
| श्रामा मिश  | 5.    |
| ॰ । জজ्ञतांच स्ट्वांत मिनः  | 3.    |
| • । टेक्टनाकानाथ ভটाচाधा, थागंड़ान मानार्थः   |       |
| ॰ ॰ नीमात्रत पाड़िशाम, ভাঙ্গোড় मात्रिक्न.वढ़   |       |
| । इतनाथ वल्लाभाषास, लाहाशका यदलात   | •     |
| ॰ উয়েশ্চজ মজুমদার, সিলং  | 50    |
| ॰ । ইন্দুনাথ ভটোচার্ঘ্য, দেহারাছন   | @110  |
| • ধনকুষ্ণ বন্দ্যোপাধ্যায়, গানর ফেশন  | æ     |
| * । तामकुमात हिल्लाभाषात्र, बमत्रगळ तश्रुत  | 30    |
| • গমাখ্যলাল বয়, পিপরা মতিহারি  | •     |
| ॰ । উমেশত स्म नाश- आधिन श्रुत छ। का   | 3.    |
| ॰ । नत्राखनाथ চটোপাধায়, গোষরভালা   |       |
| २८ भन्नाची  | 20    |
| <ul> <li>अश्टित्य सन्ति, भोडिश्व</li> </ul>   | 3.    |
| ॰ ॰ लागी जुवन वर्णा भाषा । वन याम   | . 5   |
| <ul> <li>শ্রামাচরণ হোষ, ঢাকা</li> </ul>   | 3.    |
| ॰ • इम्बिनिम मिळ, (यमाउम  | 30    |
| • । बिर्गकत (मत्र किर्माणका ।   | 0.110 |
| ॰ ध्याद्याद्याद्य (एद) हावड़ा   | •     |
| बाङ्गा नदब्स नाबाशना बाग्न वाहाछ्य । दोश्याकानि   | 30    |
| श्चित गराकान भीतवञ्च, तश्भूत  | 30    |
| मुन्ति व्यादमत स्थाना बका, तश्थ्रं ।  | 3.    |
| (योगरी दशका दशक्रियं मादश्य, जायमे ——   | •     |
| क्षित्र होत्रकी द्वासिंग डेमिन, द्याद्वन शंक  | 5.    |
| विद्यास्त्र सिंग्डिश्कान, ऐथना  | 30    |
| शक्ति हो भेगाहर, घटनाव  | 50    |
| क्षियुक्त यामु चिरमास्ट्यार्थार्थार्थार्थार्थाः, यथकाः ।  | 3.    |
| न स्थान है। स्वान स्थान | •     |
| • । स्टूबाध एक्तरहों, श्रीनी विष्यांन   | >0    |
| FINE TREET WITH STATE OF STATE OF THE STATE | 50    |

' देक्नाभाउस (म्य, (उड़ाश्री

|  | 1      |
|--|--------|
| ' ' (मदबस्मनाथ রায়, পাবনা                   | 30     |
| * হরিচরণ পরামাণিক, আরা                       | 30     |
| ' 'হেমন্তকুমার রায়, কিল্ছার, বীরভূম         | >0     |
| ॰ ॰ किमात्रनाथ माम, हां भारे, वर्डिपूत       | 30     |
| ॰ ॰ ताइहन्त्रभ ताश, नष्टाल, यदभात            | 30     |
| * वार्तिकानाथ यज्ञानात, त्याद्वनाञ्च         | 90     |
| ॰ भावकुष्ण तमम, वशनी शूत                     | CH.    |
| * ভুবনমোহন ঘোষ, মুস্থরিকুটি, তিত্ত           |        |
| ' मिननाथ तारा, श्रुलना                       | 30     |
| " यक्तित्रवाह्न (मनाशिक, जूमशिष्, भूतिनी     |        |
| ॰ धत्नीधत ताम्र, शिविश्वत, नाटिंग त          | 30     |
| ' ভুবনচজ্ঞ মুখোপাধ্যায়, দেহারাছন            | 30     |
|  | Dio !  |
| ॰ वाधारगाविक मछल, वर्कमान                    | 9      |
| ' अञ्जलाल मूर्थाभाग्रः, वािकञ्भूत, जिल्      | 5 @    |
| * ' क्रेमान छ ख वक्नी, ध्वड़ी                | 8      |
| * (एदिख्यमार्थ भाग, वित्रमः ल                | 3.     |
| ॰ ॰ পূर्व ज्ञा ता या, कार्राम शूर, स्माम शूर | 3      |
| ॰ ৽ মদন মোইন তেওয়ারি, বদ্ধনান               | 30     |
| ॰ (इयाज्य मूर्थाभाधाय, मारात्नभूत            | en .   |
| • • व्यक्षिका हत्। वा मिन्न, वाना श्वाम      | •      |
| ॰ ॰ नवीन চला (घाष, ময়মানসিং                 | 3.     |
| ॰ भी विष्ठल वस्न, शांडाश                     |        |
| ॰ । (यारशिक्षठक ठक्वर्डी, त्र्यञ्भूत,वतिभाव  | 1 0    |
| ॰ ॰ অভয় চরণ রায় চৌধুরী, বেলেটী, মানিকগাঁৱ  | 300    |
| ः भीजानाथ मूर्थाशायाय, महादिनवश्रुत, मिन     | ाज भूत |
|  |        |
| ' গিরিশচজে রায়, দমদ্শা                      | 8      |
| ॰ - देवक्षे नाथं ताज्ञ, नद्भो                |        |
| ও উমা চরণ বন্দ্যোপাধ্যায় চুনার              | •      |
| ' भानवाम वर्मन, ममनावाम, वर्मम्              | 3.     |
| ॰ 'शोकेदिर्शांत्र मङ, कागामिशि, मिना ज्ञा    | 30     |
| ः । शान नाथ जाय, कार्तियभूत, वर्षयान         | 50     |
| । এনিলেইণ হাজরা শিকারপুর                     | 50     |
| । भी जानाथ मारा, देवन हे, हाका               | 50     |
| · হরিশ্চজে ঘোষ, কুমিলা                       | 5.     |
| ॰ । बुङ्गीकास (घाष, नड़ाल, घटणांत            | 30     |
| 39(1),100(1),101(1)                          |        |

| ٤ | •     | (याक्टिक्टाइ पड़, कागामायग्रमभाग रम  |     |
|---|-------|--------------------------------------|-----|
|   |       | थान नाथ রায়, কোরিমপুর, বর্দ্ধমান    | 50  |
|   |       | মণিযোহণ হাজরা শিকারপুর               | 50  |
|   |       | मी जानाथ मारा, देयन है, हाका         | \$0 |
|   |       | হরিশ্চজে ঘোষ, কুমিলা                 | 3.  |
| 6 | •     | ब्रज्ञीकान्ड (घाष, नज़ान, यद्गांत    | 50  |
| 6 | 6     | क्रमान क्रमान मूर्थभ्याधाः, थे। छेना | 30  |
|   |       | যভেতথ্র রায়, তিত্ত                  | 30  |
|   |       | প্ৰিকড়ি মুখোপাধ্যায়, আলাহাবাদ      | en  |
|   |       | मिननाथ वदनगिशाधाः अ, शाशानश्र        | e   |
|   |       | मामिद्यार्न रालमात वर्द्रभभूत        | 30  |
|   |       | भानाम जानि (हिधुती, हाका             | 30  |
|   |       | আমির আলী, দিনাজপুর                   | 50  |
|   |       | দেখ কোলিমুদ্দিন, নাটে।র              | 0   |
| 6 | 6     | রাইচরণ দত্ত, গোয়াস, বরিশাল          | 3.  |
|   |       | त्रजनीन थ शदणाथाश, गानिक याग, तः शूत | >0  |
| 4 | 4     | लङ्की ताम माम, शम, गि, (उङ्ग शूत     | 5.  |
| 6 | 35131 | तामकृष्य मुत्थाथायाय, शायालन्        | 50  |
|   |       | অতলচন্দ্দ, বেনাব্দ                   | 30  |

भीनिव (बार्य्किन छोयूती, देवनमामां डांबा छाका ३०

श्किम शश्चाम पाली थां, वातिशियां, छे। इता हैल

युनि (माद्यप ग्राज्यांनी, श्रीत्रक्षिश्यांनेय

#### ' দिननाथ बिक्क बाकू छ।, ' किटमाति (याद्य कित्रती, मित्रत्र यस्य। यस्य।

@110

बीयुक्त वाबू (शांविन्म लाल वमांक, णाका

विख्डाशन । जून जिदकन शांदर्भ। ज्यानि शु

॰ याजनान (होर्डी, शांध याग, जाश्नावाम ३०

ब्रांककीय थानीवाधिका डेल्डांन खदर्भत निश्य।

वृथवात......कवल दमभव अव प्राच्याकाती बाजिताई श्रादिशं कति विश्वा बुङ्ग्रिवां त .................. @ of ata..... अनि यात्र.....। इवि वाञ्च.....॥० मिट्जन एिकि जर्शि ३४११ महन १०० जुन

शर्गाख वुधवांत जिल्ला जाना मकल वादत श्रीवण कति-वात जीदक छ।

दक्वल जिरक है गृशैजा भाषी, (घाषां क्र किया कि शंगिया প্রবেশ করিবার ফিঃ মং ২৫ টাকা

क्विन जीकि शृशी जा जा जा कि श्रीया প্রবেশ করিবার ফিঃ यং ১৬ টাকা।

तूथवात किवल भिष्नत जार्था ए यो हाता एक भाउ होका कांन कर्तियाए इन ध्वर एडानांत याहांता धक गर्ञ छोका मान कतिशाह्न जोश्मिर्भन जना तकिं थाकि (वक।

ठाकामाञा ভिन्न वाङ्गिपरगंत गांडी अ ठिका गांड़ी প্রতি মং ১ টাকা ঘোড়া প্রতি । जाना এবং शांल कि প্রতি ॥० वाना विविद्यक किः पिछ र्रेद्र।

कल (थाला इइशाट्छ। हान्मानां वा वा किता कि, वर्शां किः वाजिज धवः वाश्व माधात्व वाकिता यः ३ छोक। किः फिल्ल श्रांत्वन कति ।

षानीय अक देशका यश्र

इंडेरताशीश जबर जन्मनीश वाङिनिद्रभन व्याहातापि कतिवात गृश् स्थाला इहेशास्त्र।

व्यां पाउगाकाती এবং ডোনার वाकिता প্रভाइ मर्शतिवादा शां ডि निया कि ज्यां १ किः वाजिज शादाण कतिएज शाहित्वन।

> H. M. Tobin Hon. Secretary.

वांगता देश्ल इहेट गम् (हांगि अगांधिक यश्रा श्रा श्रा विष्य निष्य निष्य । विषय निष्य निष्य अ এখানে পা अया यात्र ।

वांगांत श्रानी डा

(र्शिय अशारिक किर्म। विष्ठ 'नः माग्र एक क्यां अ

उस थए, उस मरथा।

30

(श्रामि अगारिथक दे जयगाज ज अग "

व्यर्गदिशंदशंत यदश्वध 3110 वर्ण द्वांगीता वाशनर लगण शार्राहेदवन।

छोक (तारभात भरहो वस द्शिव अशाशिक (मिन (इन्हें 20

उलाडिठात २० लिलि वाक म

३० निर्मा वाक्स

वरे बांक एम वक वक थानि शुखक थाकित्व यांश बाता धरे किंग वार्षि उ देशत नाना श्रकात शतिवर्जिङ शीषांत किकिৎम। অভি महर्ज कत्रा यादेष । इंदा निजास मतन ভाराয় निथि।

विविद्याहिलाल खाइडी किनकोडं, ७८ नः कर्उशिनिम शि ।

श्चिष्ठ शिक्तिका किनकाठा, बागवाङात आनम <u>ह</u>न्द्र চাট্রেয়ার গালি २ मং বাটা হইতে প্রতি রহস্পতিবার क्रिक्स नाथ तात्र वात्रा धकाणिक रत्र।